हिन्दी मासिक
# सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जनवरी, 2015 वर्ष 13 अंक 11

## है यह दुआ इस्लाम का मरकज़ रहे यह देश

उन्नति करो खेती में, व्यापार में बढ़ो
उद्योग को अपनाओ और धनवान तुम बनो
राकेट बनाओ और फिर तुम चाँद पर चढ़ो
बुद्धि पे अपनी लेकिन, तुम गर्व ना करो
ईजाद दवाएं करो, रोगों को मिटाओ
प्रयास से अपने तुम, निर्धनता भगाओ
अनपढ़ न रहे देश में, हर इक को पढ़ाओ
मालिक तुम्हारा कौन है, तुम यह भी बताओ
ऋषियों का है देश और मुनियों का है यह देश
धर्मों के और ज्ञान के गुरुओं का है यह देश
इस्लाम के उल्मा व बुजुर्गों का है यह देश
है यह दुआ इस्लाम का मरकज़ रहे यह देश

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

### सहयोग राशि

| | |
|---|---|
| एक प्रति | ₹ 15/- |
| वार्षिक | ₹ 150/- |
| विशेष वार्षिक | ₹ 500/- |
| विदेशों में (वार्षिक) | 30 यु.एस. डॉलर |

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
**"सच्चा राही"**
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

# विषय एक दृष्टि में


| | | |
|---|---|---|
| कुर्आन की शिक्षा | मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी | 3 |
| प्यारे नबी की प्यारी बातें | अमतुल्लाह तस्नीम | 4 |
| औलिया उल्लाह की पहचान | डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी | 5 |
| जगनायक | हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी | 10 |
| हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में | हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0 | 13 |
| तबलीगे नबवी सल्ल0 उसके | अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0 | 16 |
| हज का सौभाग्य प्राप्त करने वालों | मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी | 20 |
| इख़्लास और उसके बरकात | मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0 | 21 |
| शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 | इदारा | 23 |
| मुसलमानों की जागरूकता | मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी | 29 |
| आपके प्रश्नों के उत्तर | मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी | 32 |
| हमारी नई नस्ल और | डॉ0 हैदर अली खाँ | 35 |
| हरमैन शरीफैन | | 37 |
| यह दिन है स्वतंत्रता का | इदारा | 38 |
| उर्दू सीखिए | इदारा | 39 |
| अंतर्राष्ट्रीय समाचार | डॉ0 मुईद अशरफ नदवी | 40 |

# क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

**सूर-ए-बकर:**

**अनुवाद**- दीन के मुआमले में जबरदस्ती नही, बेशक हिदायत गुमराही से जुदा हो चुकी है[1] अब जो कोई गुमराह करने वालों को न माने और अल्लाह पर यकीन लाये तो उसने पकड़ लिया मज़बूत हल्क़ा जो टूटने वाला नही और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है[2][256]। अल्लाह ईमान वालों का मददगार है उनको अंधेरों से रौशनी की तरफ निकालता है और जो लोग काफिर हुए उनके रफीक (दोस्त) हैं शैतान निकालते हैं उनको रौशनी से अंधेरों की तरफ यही लोग हैं दोज़ख़ में रहने वाले यह उसी में हमेशा रहेंगे[3][257] क्या तू ने उस शख़्स को न देखा जिसने झगड़ा किया इब्राहीम से उसके रब के बारे में, इस वजह से कि अल्लाह ने उसको सलतनत दी थी, जब कहा इब्राहीम ने मेरा रब वह है जो ज़िन्दा करता है और मारता है वह बोला मैं भी जिन्दा करता और मारता हूँ, कहा इब्राहीम ने कि बेशक अल्लाह तो निकालता है सूरज को पूरब से, अब तू ले आ उसको पच्छिम की तरफ़ से, तब हैरान रह गया वह काफिर और अल्लाह बे इंसाफों को सीधी राह नहीं दिखाता[4][258]।

**तफ़्सीर (व्याख्या):-**

1. जब तौहीद के दलाइल अच्छी तरह बयान फरमा दिये गये जिससे काफिर का कोई उज़्र बाकी न रहा तो अब ताकत के बल पर किसी को मुसलमान करने की क्या ज़रूरत हो सकती है अक़्ल वालों को खुद समझ लेना चाहिए और न शरीअत का यह हुक्म है कि ज़बरदस्ती किसी को मुसलमान बनाओ, खुद इस पर हदीस मौजूद है, और जो जिज़या (टैक्स) को कबूल करेगा उसका जान व माल महफूज़ हो जायेगा।

2. यानी जब हिदायत व गुमराही में तमीज़ (फर्क़) हो गयी तो अब जो कोई गुमराही को छोड़ कर हिदायत को मंजूर करेगा तो उसने ऐसी मज़बूत चीज़ को पकड़ लिया जिसमें टूटने छूटने का डर नहीं और हक तआला जाहिरी बातों को खूब जानता है नीयत व हालते कलबी को खूब जानता है उससे किसी का खियानत और फसाद नीयत छुपा नहीं रह सकता।

3. पहली आयत में अहले ईमान व अहले कुफ्र और उनके नूरे हिदायत और जुल्मते कुफ्र का जिक्र था अब उसकी ताईद में मिसालें बयान फरमाते हैं पहली मिसाल में नमरूद बादशाह का ज़िक्र है वह अपने आपको सलतनत के गुरूर से सजदा करवाता था हज़रत इब्राहीम अलै0 उसके सामने आये तो सजदा न किया, नमरूद ने पूछा तो फरमाया कि मैं अपने रब के अलावा किसी को सजदा नहीं करता उसने कहा रब तो मैं हूँ, उन्होंने जवाब दिया कि

शेष पृष्ठ .....12.... पर

# प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

## मुजाहिद की फजीलत और आप सल्ल० की तमन्ना

**मुजाहिद का शरीके हाल (मददगार)–**

हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस आदमी ने खुदा की राह में जिहाद करने वाले के लिए लड़ाई के सामान का इंतिजाम कर दिया तो गोया उसने खुद जिहाद किया (यानी सवाब में बराबर का शरीक है) और जिसने किसी ग़ाज़ी के घर बार की देख रेख की तो गोया उसने खुद जिहाद किया। (बुखारी—मुस्लिम)

**मुजाहिद की खिदमत–**

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रास्ते में किसी मुजाहिद के लिए या हाजी के लिए खेमा लगा देना या किसी खादिम या किसी ऊँटनी को सिर्फ अल्लाह के लिए किसी को दे देना अफ़ज़ल तरीन सद्क़ा है। (तिर्मिज़ी)

**मुजाहिद को सामान देने वाला–**

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि कबीलये असलम के एक नवजवान लड़के ने हुजूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं जिहाद में शरीक होना चाहता हूँ लेकिन सामाने हब्र (जंग में इस्तेमाल होने वाला सामान) नहीं है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया फुलाँ आदमी ने जंग का सामान किया था, फिर वह बीमार हो गये, तुम उनके पास जा कर मेरा सलाम कहो और कहो जो कुछ तुमने सामान तैयार किया है वह मुझे दे दो, जब उन्होंने जा कर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पैगाम सुनाया तो उन्होंने अपने घर वालों से कहा जो सामान मैंने तैयार किया था वह सब इनको दे दो कोई चीज़ बाक़ी न रहे, खुदा की क़सम सब दे देने में ही बरकत होगी। (मुस्लिम)

**मुजाहिद की क़ाइम मकामी (प्रतिनिधित्व)–**

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनी लहयान की तरफ फौज भेजी और फरमाया जिस घर में दो आदमी हों तो एक जाये और एक क़ाइम मकामी करे, सवाब में दोनों बराबर होंगे। (मुस्लिम)

और एक रिवायत है कि हर दो में से एक जाये और एक रहे और रहने वाले से फरमाया तुम ग़ाज़ी की क़ाइम मकामी करोगे, उसके पीछे उसके घर की निगरानी करोगे तो तुम को ग़ाज़ी का आधा सवाब मिलेगा।

**थोड़ा अमल और ज़ियादा सवाब–**

हज़रत बरा रज़ि0 से रिवायत है कि एक आदमी जो ढाल व तलवार और खोद (लोहे की टोपी) व जिरह (लोहे का जालीदार कुर्ता जिसे जंग में पहनते हैं) से सुसज्जित था

शेष पृष्ठ.....15...पर

# औलिया उल्लाह की पहचान

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

औलिया, वली शब्द का बहुवचन है। वली के बहुत से अर्थ हैं परन्तु यहां मित्र का अर्थ लिया गया है यह मित्रता सान्सारिक मित्रता की भाँति नहीं है अपितु इसको यूं समझें कि अल्लाह का बन्दा (दास) जब अपने पालनहार का आज्ञाकारी हो कर उससे प्रेम करने लगता है तो अल्लाह भी अपनी कृपा से अपने उस बन्दे को अपना प्रेम प्रदान करता है। यह प्रेम भी सांसारिक प्रेम से पृथक होता है। सांसारिक प्रेम कभी खूनी रिशते अर्थात रक्त से सम्बन्ध रखने वालों से होता है जैसे माँ, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी, बहन, भाई और सन्तान से होता है या वैधानिक सम्बन्ध से जैसे पत्नी से प्रेम होता है या ऐसी सुन्दरता से प्रेम होता है जो मन को आकर्षित करती है या लाभदायक लोगों से या वस्तुओं से प्रेम होता है परन्तु अल्लाह के बन्दे का प्रेम अल्लाह से इन सब प्रेमों से अलग होता है जिसकी व्याख्या सरल नहीं यहां कुछ संकेत किया जाता है। अल्लाह सर्व शक्तिमान है। बड़ा दयालु तथा कृपालु है उसकी दया का अनुमान करना बहुत कठिन है माँ अपने दूध पीते बच्चे पर जितनी दया करती है और उससे प्रेम करती है अल्लाह तआला अपने आज्ञाकरी बन्दे पर उससे कहीं अधिक दयावान होता है इस दया और कृपा से जब बन्दा अवगत होता है तो उसके मन में अपने पालनहार का प्रेम उबल पड़ता है। अल्लाह ने बन्दे को जन्म दिया उसको भला सा शरीर दिया उसके शरीर को हाथ, पैर, नाक, कान, हृदय, मस्तिष्क जैसे बहुमूल्य अंग दिये, उसको हवा, पानी, अन्य फल सब्जी जैसी वस्तुऐं प्रदान कीं इन सब पुरस्कारों को पा कर बन्दे का मन अपने मालिक के प्रेम में लीन हो जाता है। अल्लाह तआला अपने साथ साझी बनाने वाले, कुफ्र करने वाले बन्दों से बहुत क्रोधित होता है, उग्रवाद, आतंकवाद और अत्याचार वालों से नाराज़ होता है दूसरों की नाहक़ जान लेने वालों, अकारण किसी को दुख पहुंचाने वालों से नाराज़ होता है तथा अपनी अवज्ञा करने वालों को इस संसार में भी दण्ड देगा तथा मरने के पशचात आख़िरत के जीवन में जहन्नम की आग का दण्ड देगा ये सब जानकर बन्दा जब ये पाता है कि अल्लाह ने इन तमाम बुराइयों से बचाकर उसको अपना बना लिया है तो उसका मन अल्लाह के प्रेम से झूम उठता है। ऐसे बन्दों से अल्लाह प्रेम करता है अर्थात अल्लाह उसको संतोष प्रदान करता है उसकी सुरक्षा करता है उसको इस संसार में भी पुरस्कृत करता है और आखिरत में भी इस प्रकार पुरस्कृत करेगा जिसको मानव का मस्तिष्क सोच भी नहीं सकता है अतः अल्लाह का

वली वह है जो अल्लाह से प्रेम करता और अल्लाह उससे प्रेम करता है।

वली का अर्थ किसी हद तक बयान हुआ, वलीयुल्लाह अथवा औलिया उल्लाह की पहचान पर बात होनी है, प्रेम अथवा महब्बत, ईमान अथवा विश्वास का सम्बन्ध आंतरिक मन से होता है, वह औरों को दिखता नहीं, परन्तु उस आंतरिक भाव का प्रभाव अवश्य होता है जो आंतरिक भाव पर साक्षी होता है, औलिया उल्लाह की पहचान इसी दिखने वाले प्रभाव को यहां अवगत कराने का प्रयास किया जाएगा।

पवित्र कुर्आन में औलिया उल्लाह की पहचान स्पष्ट की गई है जो इस प्रकार है—

अला इन्न औलिया अल्लाहि ला ख़ौफुन अ़लैहिम वला हुम यहज़नून, अल्लज़ीन आमनू व कानू यत्तकून।

(यूनुसः 62,63)

**निकटतम अर्थः** "सुनो सुनो अल्लाह के वलियों को न कोई भय होगा ना ही वह दुखी होंगे, (अल्लाह के वली) वह जो ईमान लाए (अल्लाह के भेजे हुए इस्लाम को स्वीकार किया) और अल्लाह से (जीवन के हर अवसर पर उसकी अवज्ञा पर उसकी पकड़ से) डरते रहे"।

पहले हम ईमान और तक़्वा (अल्लाह से डरते रहने) पर बात करेंगे कि यह दोनों बातें अल्लाह के वली की पहचान हैं, फिर उनके भय रहित तथा दुख रहित होने पर बात करेंगे।

ईमान अर्थात इस्लामी विश्वास, अल्लाह के पैग़म्बरों (सन्देष्टाओं) की बताई हुई दीन से सम्बन्धित दृष्टि में आने वाली तथा परोक्ष की समस्त बातों को मान लेने को कहते हैं, औलियाउल्लाह हर काल में रहे हैं, और वह आपने काल के पैग़म्बर (सन्देष्टा) की बातें मानते रहे हैं अर्थात उस पर ईमान रखते रहे हैं। हमारे ज्ञान में पिछले पैग़म्बरों की बातें सुरक्षित नहीं रही वरना हम देखते कि परोक्ष से सम्बन्धित सभी पैग़म्बरों की सूचनाएं समान हैं। इस्लाम के आ जाने पर पिछले पैग़म्बरों की शरीअतें (संविधान) मन्सूख़ (निरस्त) हो गईं अब अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअ़त पर चल कर ही नजात (मोक्ष) प्राप्त की जा सकती है अतः अब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बताई हुई सभी बातों को मानने का ही नाम ईमान (इस्लामिक विश्वास) है। जिन चीज़ों को हमारी आँखों ने नहीं देखा न इस सांसारिक आँखों से उनको देखना सम्भव है परन्तु अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम को सूचित किया है हम उन सब को अपनी आँखों देखी वस्तुओं से अधिक विश्वस्नीय मानते हैं जैसे बताया जन्नत है उसमें हर प्रकार के अच्छे स्वादिष्ट फल हैं, कभी न ख़राब होने वाले पानी की, दूध की, शहद की नहरें हैं, बौखला न देने वाली केवल आनन्द देने वाली स्वादिष्ट मदिरा है, जन्नतियों को आनन्दित करने वाली सुन्दर हूरें हैं, सदा बच्चे ही रहने वाले सुन्दर ग़ुलाम हैं, जो जन्नतियों की सेवा के लिए हर समय उपस्थित रहेंगे,

अर्थात जन्नत में ऐसी ऐसी सुख दायी सामग्रियाँ होंगी जिन की कल्पना असम्भव है। हम उन सब को मानते हैं अल्लाह के वली हम से अधिक विश्वास के साथ सब को मानते हैं। पवित्र कुर्आन और पवित्र हदीस की पुस्तकों में ईमान का संक्षेप के साथ इस प्रकार उल्लेख है–

ईमान लाओ अल्लाह पर, उसके फरिश्तों पर, उसकी उतारी हुई किताबों पर उसके भेजे हुए रसूलों पर, कियामत के दिन पर, तथा तक्दीर पर अच्छी हो या बुरी वह अल्लाह ही की ओर से है।

इस आदेश में 6 बातों का वर्णन है इनमें हर एक बात के विस्तार के लिए पूरी पुस्तक कम पड़ेगी। इनमें अल्लाह पर ईमान और उसके रसूलों पर ईमान बड़ा महत्व रखते हैं। इस काल में रसूलों पर ईमान से अन्तिम रसूल पर ईमान ही सब कुछ है, अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताने ही से हमने अल्लाह तआला के गुणों को जाना और संक्षेप में कहा ईमान लाया मैं अल्लाह पर जैसा कि वह अपने नामों और सब गुणों के साथ है और उसके समस्त आदेश स्वीकार किये। अल्लाह की किताब में जिन्नातों का उल्लेख है यद्यपि हम उन्हें देखते नहीं परन्तु मानते हैं। इब्लीस और शैतान के विषय में जो कुछ कुर्आन और हदीस में आया है सब को मानते हैं। अल्लाह के औलिया इन सब बातों को हम से कहीं पक्के विश्वास से मानते हैं। फिर मैं यहाँ यह बात दोहराऊँगा कि इन तमाम मानी जाने वाली बातों का स्थान मन है जिसे देखा नहीं जा सकता परन्तु इस आंतरिक विश्वास का प्रभाव मनुष्य के व्यवहार में दिखता है जिसको हम तक्वे का प्रत्यक्ष रूप कह सकते हैं।

तक्वा (ईशभय) का सम्बन्ध भी मन से है जो ईमान लाने वाले के मन में उत्पन्न होता है। एक सहाबी ने तक्वा की व्याख्या क्या खूब की है, हज़रत फ़ारूके आज़म ने मुआज़ बिन जबल से तक़्वे का अर्थ पूछा तो उन्होंने उत्तर में कहा, क्या आप किसी काँटे दार झाड़ी वाले रास्ते से गुज़रे हैं? आपने कहा हाँ, तो हज़रत मुआज़ ने पूछा कैसे? आपने कहा कपड़े समेट कर निकल गया, हज़रत मुआज ने कहा यही तक़्वा है।

बस संसार में अपने को गुनाहों के कांटों से बचा कर चलने का नाम तक्वा है। तक्वे का अर्थ भी बहुत विस्तार चाहता है, यहाँ संक्षेप में यह कहता हूँ कि जीवन के हर कार्य में अल्लाह का ध्यान रखना तक़्वा है, यह देखना किस बात से अल्लाह राज़ी और प्रसन्न होता है उसको अपना लेने और जिस बात से अल्लाह नाराज़ होता है उसे छोड़ देने का नाम तक्वा है। पवित्र कुर्आन में आदेश दिया गया है कि "वमा अताकुमुर्रसूलु, फ़ाख़जूहु वमा नहाकुम अन्हू फन्तहू (हश्र:7) "जिस बात को रसूल कहें वह करो जिससे रोक दें उससे रुक जाओ" तक्वे की यह बड़ी पहचान है इसके लिए अल्लाह के रसूल के तमाम आदेशों को जानना आवश्यक है। तभी अपनाने वाले कामों को अपनाया और

छोड़ने वाले कामों को छोड़ा जा सकता है। अल्लाह के वली अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तमाम आदेशों से विशेष कर अपने जीवन से सम्बन्ध रखने वाले आदेशों से पूरी तरह अवगत होते तथा उनको अपने व्यवहार में जारी किये होते हैं। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने जब सहाबा को दीन सिखाने के लिए सहाबा के सामने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा इस्लाम क्या है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया कि तुम गवाही दो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नही और गवाही दो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं, और नमाज़ काइम करो (अर्थात भली भांति पढ़ो) तथा अपने माल की ज़कात दो (अर्थात धनवान अपने धन से गरीबों का वार्षिक हक़ निकाल कर उनको अदा करे) और रमज़ान के रोजे रखो सामर्थ्य होने पर (जीवन में एक बार) हज करो।

इन पाँच बातों के लिए कई पुस्तकें चाहिए अल्लाह का वली इन सब बातों से भली भांति अवगत होता है और उसके जीवन में यह उपासनाएं विद्यमान होती हैं याद रहे जो व्यक्ति कल–मए–शहादत जिसका उल्लेख ऊपर हुआ (गवाही वाला कल्मा) से अवगत नही होता, नमाज़ का पाबन्द नहीं होता, माल होते हुए भी उसकी वार्षिक ज़कात नहीं निकालता, रमज़ान के रोज़े नहीं रखता, सामर्थ्य होते हुए हज नहीं करता यदि वह पागल नहीं आकिल बालिग़ है तो वह कदापि अल्लाह का वली नहीं हो सकता।

तक़्वे का उत्तम स्थान एहसान है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया कि एहसान यह है कि तुम इस प्रकार उपासना करो जैसे तुम उस समय अल्लाह को देख रहे हो, यदि तुम उसे देख नहीं सकते (और इन आँखों से संसार में अल्लाह को देखना असम्भव है) तो उपासना के समय यह सोचो कि अल्लाह तो तुम्हें देख रहा है। अल्लाह के वली दो प्रकार के होते हैं, एक साधारण वली इस अर्थ से हर ईमान वाला अल्लाह का वली है, अल्लाहु वलीयुल्लज़ीन आमनू (अल–बक़रहः 258) दूसरे विशेष वली उनका ईमान व अमल साधारण ईमान वालों से कहीं उत्तम होता है। वह केवल उपासना के समय नहीं अपितु हर समय उनका ध्यान इस पर रहता है कि अल्लाह उनको देख रहा है, उपासना में उनका जो हाल होता है उसको वही जानते हैं उनमें भी श्रेणियां हैं, उनमें से तो कुछ के बारे में अल्लाह तआला ने अपने रसूल द्वारा बताया कि मैं उनका हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकड़ते हैं, पाँव बन जाता हूँ जिससे वह चलते हैं अर्थात उनका कोई काम अल्लाह की अवज्ञा में नहीं होता।

**करामत**– अल्लाह के वलियों से कभी करामतें (चमत्कार) भी ज़ाहिर होती हैं अर्थात उनकी दुआ से रोगी चंगा हो जाता है, खाने में बरकत हो जाती है, यद्यपि अल्लाह

तआला अपने वली की इज़्ज़त बढ़ाने के लिए अपने वली से कोई चमत्कार दिखा देता है, लेकिन वली से करामत ज़ाहिर होना वली की पहचान नहीं है।

**कश्फ़**– कभी अल्लाह के वली को दूसरे की बात मालूम हो जाती है इस प्रकार कि उसके दिल में वह बात स्वतः आ जाती है इसको कश्फ़ कहते हैं, कश्फ यक़ीनी (विश्वस्नीय) नहीं होता अनुमानित होता है, इसलिए इल्लाह के उत्तम वली अपने कश्फ़ को छुपाते हैं कश्फ़ भी वली की पहचान नहीं है न यह वली के लिए आवश्यक है। किसी हद तक वली की पहचान का बयान आ गया यह अल्लाह से डरने वाले होते हैं, अल्लाह के आज्ञाकारी होते हैं इन दोनों बातों में उनका स्थान बहुत ऊँचा होता है।

अब हम बात करेंगे कि उनके भय रहित तथा दुख रहित होने का क्या अर्थ है।

औलियाउल्लाह के विषय में सूचना दी गई कि उनको न कोई भय होगा ना ही वह दुखी होंगे, स्पष्ट लगता है कि यह सूचना अगले जीवन से सम्बन्धित है, अर्थात मरणोपरांत उनको बरज़ख़ी ज़िन्दगी में कोई भय तथा दुख न होगा, क़ियामत के दिन हश्र के मैदान में वह भय तथा दुख से दोचार न होंगे न जहन्नम की आग का सामना होगा, वह जन्नत में प्रवेश करेंगे वहां सबसे बड़ा पुरस्कार अल्लाह का दर्शन होगा जन्नत में सदैव रहेंगे वहां उनको वह सुख मिलेगा जिसे न किसी आँख ने देखा होगा और न कोई हृदय व कोई मस्तिष्क उसकी कल्पना कर सका होगा। परन्तु इस संसार में अल्लाह के वली भी न भय से बच सकेंगे और न दुख से।

पवित्र कुर्आन में स्पष्ट घोषित किया गया है कि "क्या लोग अनुमान करते हैं कि वह कहें कि हम ईमान लाए फिर वह ऐसे ही छोड़ दिये जाएं और उनकी परीक्षा न ली जाय" (अनकबूतः 2) दूसरी जगह आया है, अल्लाह तआला सूचित करते हैं कि हम आवश्य तुम्हारी परीक्षा लेंगे कुछ भय से, भूख से तथा धन की हानि से, मालों की हानि से, फलों की हानि से, और ऐ मेरे पैग़म्बर आप शुभसूचना दीजिए धैर्य वालों को कि जब उन पर (परीक्षा हेतु) कोई विपत्ति आती है तो वह (सन्तुष्ट हो कर) कह उठते हैं कि हम तो अल्लाह के हैं, अल्लाह के लिए हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं (अलबकरहः 155,156) अतः सिद्ध हुआ है कि इस संसार में वली भी भय तथा दुख से जाँचे जाते हैं। परन्तु उनको संतोष प्राप्त रहता है और वह इन्नालिल्लाहि पढ़ कर संतोष तथा शान्ति प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत नास्तिक, अनेकेश्वर वादी, कुकर्मी, अल्लाह की अवज्ञा करने वाले, उग्रवादी, रक्त पाती, आतंकवादी, अत्याचारी, व्यभिचारी, चोर, डकैत, घूस खाने वाले पापी जन कभी भी न भय मुक्त हो पाते हैं न दुख मुक्त हो पाते हैं उनके हृदय को उनके मनको उनके मस्तिष्क को कभी भी स्थाई शांति तथा संतोष प्राप्त नहीं होता। अल्लाह तआला

शेष पृष्ठ.....19...पर

# जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

**आख़िरी हज के अवसर पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश और वसीयतें—**

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो हिदायात (आदेश) इस हज के दौरान ख़ुतबे में दीं, उनमें एक बड़ी हिदायत और वसीयत यह की कि इन्सानी बिरादरी में मसावात (बराबरी) रहे आपने इन्सानी बिरादरी में एक को दूसरे से मसावी (बराबर) क़रार देने का एलान फ़रमाया और यह फ़रमाया कि किसी एक की बरतरी (बड़ाई) दूसरे के मुकाबले में उसी कदर होगी जितना की वह अपने परवरदिगार यानी अल्लाह के हुक्मों का ज़ियादा पास व लिहाज़ रखने वालो हो। उसके अहकामात (आदेशों) में एहतियात (सावधानी) से ज़िन्दगी बसर करने वाला हो। इरशाद फ़रमाया—

तर्जुमा "ऐ लोगो! तुम जानते हो कि यह कौन सा महीना और कौन सा दिन है? और तुम किस शहर में हो? लोगों ने जवाब दिया, यह दिन बड़ा बा हुरमत (सम्मान वाला है) और यह महीना बड़ा क़ाबिले एहतराम और यह शहर बड़े एहतराम वाला है, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम में किसी एक की जान व माल, इज़्ज़त किसी दूसरे के लिए इसी तरह क़यामत तक क़ाबिले हुरमत व एहतराम वाली हैं, जिस तरह आज का यह दिन, यह महीना, यह शहर। फिर फरमाया सुनो मुझसे वह बातें सुनो जिनसे तुम सही ज़िन्दगी गुज़ार सकोगे। ख़बरदार ज़ुल्म न करना, ख़बरदार ज़ुल्म न करना, ख़बरदार ज़ुल्म न करना, किसी मुसलमान शख़्स के माल में से कुछ लेना जायज़ नहीं हाँ अगर वह राज़ी हो (तो कोई हरज नहीं) हर एक की जान, हर एक का माल, जो जाहिलियत के ज़माने में जायज़ समझा जा रहा था अब क़यामत तक उसको जायज़ समझा जाना ख़त्म किया जा रहा है। सबसे पहला खून जो ख़त्म किया जाता है वह रबीआ बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब का खून था, उसने बनी लैस में परवरिश पाई थी, और हुज़ैल ने उसको क़त्ल किया था, जाहिलियत के तमाम सूद भी खत्म कर दिये गये। यह अल्लाह तआला का फैसला है और सबसे पहला सूद जो ख़त्म किया जाता है वह अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद है। हाँ सूदी मामलात में तुम्हारी जो असल पूंजी हो वह महफ़ूज़ है। इस सिलसिले में न तुम किसी पर ज़ुल्म करो, न तुम्हारे ऊपर ज़ुल्म किया जाए और देखो! मेरे बाद मेरे हुक्मों के खिलाफ न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो और देखो! अब शैतान भी मायूस हो चुका है कि नमाज़ पढ़ने वाले उसकी इबादत करने लगें लेकिन वह तुम्हारे दरमियान

रुकावट डालता रहेगा और देखो! औरतों के मामले में खुदा से डरो क्योंकि वह तुम्हारे मातहत हैं वह अपने मामले में इख्तियार नहीं रखतीं लिहाज़ा उनका तुम पर हक़ है और तुम्हारा उन पर यह हक़ है कि वह तुम्हारे अलावा तुम्हारे बिस्तर पर किसी को आने न दें और न ऐसे शख्स को तुम्हारे घर आने दें जिसे तुम न पसंद करते हो और अगर तुम उनकी नाफरमानी (गलत रवय्ये) से खतरा महसूस करो तो उन्हें नसीहत करो और उनकी ख्वाबगाहों को अलग कर दो और हल्के तरीके से मारो और देखो! उन्हें खाने कपड़े का हक़ पूरी तरह हासिल है, तुमने उन्हें खुदा की अमानत के तौर पर अपनी रिफ़ाक़त (साथ) में लिया है और उनसे जिनसी तअल्लुक (यौन संबंध) को अल्लाह के नाम से अपने लिए जाएज़ किया है और देखो किसी के पास किसी की अमानत हो तो वह अमानत वाले को वापस करे और देखो मैं अपने बाद तुम्हारे लिए एक ऐसी चीज़ छोड़े जाता हूँ अगर तुमने उसको मज़बूत पकड़े रखा तो तुम गुमराह न होगे वह चीज़ क्या है? वह है किताबुल्लाह यानी कुरआनी दस्तूरूल अमल (कार्य प्रणाली) और देखो तुमसे खुदा के यहां मेरी निसबत पूछा जाएगा बताओ तुम क्या जवाब दोगे? सहाबा ने अर्ज़ किया कि हम कहेंगे कि आपने खुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया, अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया। इस जवाब पर आपने शहादत की उंगली आसमान की तरफ उठायी और तीन मरतबा फरमाया "ऐ खुदा तू गवाह रहना" इतना फरमाने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दोनों हाथ फैलाए और फ़रमाया कि क्या मैंने पैग़ाम पहुंचा दिया। फिर फरमाया जो हाज़िर हैं वह ग़ैर हाज़िर लोगों तक यह बात पहुंचा दें क्योंकि बहुत से ग़ैर हाज़िर सुनने वालों से ज़्यादा खुशबख़्त होते हैं।"

यह वह एलान था जो इंसानी तारीख़ में सबसे पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से किया गया और जो इस्लाम के उसूलों (सिद्धान्तों) में से एक अहम उसूल करार पाया। चुनांचे इसी की बिना पर आपस के इजतिमा (सम्मेलन) के मौके पर चाहे इबादत का हो या आम (साधारण) ज़िन्दगी का, काला, गोरा और गुलाम, मालिक, हाकिम, महकूम (शासक शासित) एक साथ कांधा से कांधा मिला कर खड़े होते हैं। बराबरी और मानव सम्मान का यह पहला एलान था, उससे मिलता जुलता एलान भी उसके 13 सौ साल बाद दुन्या की मौजूदा युनाईटेड नेशन्स यानी संयुक्त राष्ट्रसंघ ने इख़्तियार किया। इस्लामी एलान से पहले रंग व नस्ल की बुन्याद पर जो जुल्म गैर मुसलमान कौमों में जारी था, उसको रोकने की कोशिश की गयी जिस पर इस्लामी सोसाइटी 14 सौ साल से खासी हद तक अमल कर रही है।

दूसरा अहमतरीन एलान आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूद को नाजाएज़ करार देने को फरमाया कि जिसको दौलतमंद लोगों ने

बिला मेहनत हासिल होने वाली मन्फअत (लाभ) का ज़रिया बना रखा था और उसके ज़रिये ग़रीबों की ग़रीबी की मजबूरी से फ़ायदा उठाने की खातिर दुन्या में बड़े जुल्म व ज़ियादती का ज़रिया बना रखा था। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका सिलसिला खत्म फरमाया और उसकी पहल अपने महब्बत करने वाले चचा हज़रत अब्बास के सूदी मुनाफे को बिलकुल बन्द कराने से की।

तीसरा एलान यह किया कि इंसानों के रंग व नस्ल के फ़र्क़ की बिना पर जो जुल्म और तफ़रीक़ (भेदभाव) चल रहा था, उसको खत्म किया और इस सिलसिले में खुद अपने खानदाने कुरैश को अरबों में क़बाएली स्तर पर जो बरतरी हालिस थी, उसकी भी परवाह नहीं की और मुसलमानों को हुक्म दिया कि वह आपस में भाईयों की तरह ज़िन्दगी गुज़ारें और आपस में हमदर्दी और मदद का तअल्लुक रखें। कोई किसी की जान को पामाल और बेआबरू न करे। उसको उसी तरह ममनू (वर्जित) फरमाया जिस तरह हज के मौके पर कई चीज़ों से मना किया गया था। उसकी हैसियत भी इबादत जैसी है, जिसमें कोताही करने से खुदा की तरफसे सज़ा मिलती हैं इसी तरीके से इस्लाम के दाइमी दस्तूर (सर्वकालिक विधान) में इंसानी मसावात बराबरी और अकीदे व दीन में आपस में एक दूसरे के साथ शरीक होने के साथ साथ एक दूसरे के बुन्यादी हुकूक (अधिकारों) में भी एक दूसरे के हक़ को तस्लीम करने और अदा करने का ज़िम्मेदार बनाया और उसके लिए काबा के इर्द गिर्द जमा हो कर रंग व नस्ल ज़बान के फर्क को नज़र अंदाज़ करते हुए आपसी मसावात व वहदत (एकत्व) का इज़हार करके उसी तरीक़े को ज़िन्दा व पाएदार किया जिसकी आवाज़ उनके बड़े दादा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने रब के हुक्म से लगाई थी (वअज़्ज़िन फिन्नासे बिलहज्जे यातूकारिजालन) और यह एलान फरफाया कि अरब हो या ग़ैर अरब, गोरा रंग हो या लाल रंग या काला रंग सब बराबर हैं, अगर किसी को बड़ाई हासिल है तो उसकी नेक खूबियों की बिना पर ही होगी। ❑❑

**कुर्आन की शिक्षा.....**

मैं हाक़िम को रब नहीं कहता, रब तो वह है जो जिलाता है और मारता है। नमरूद ने दो निर्दोष क़ैदियों को बुला कर मार डाला और दोषियों को छोड़ दिया और कहा कि देखा मैं जिसको चाहूं मारता हूँ जिसे चाहूं नही मारता, इस पर हज़रत इब्राहीम ने सूरज की दलील पेश फरमा कर उस मगरूर बे वकूफ को ला जवाब किया, और उसको हिदायत न हुई यानी लाजवाब हो कर भी इब्राहीम अलै0 के इरशादात पर ईमान न लाया– या यूं कहो कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दूसरी बात का कुछ जवाब न दे सका, हालांकि जैसा जवाब पहली बात का दिया था वैसा जवाब देने की यहाँ भी गुंजाइश थी। ❑❑

# हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

## पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

**नमाज़ कैसे पढ़ी जाये–**

अब आइये कुछ निकट हो कर मुसलमानों को नमाज़ पढ़ता हुआ देखें और मालूम करें कि वह नमाज़ किस प्रकार अदा करते हैं, किस प्रकार खड़े होते हैं और झुकते हैं, और किस प्रकार उसको आरम्भ तथा अन्त करते हैं। कौन सा भारतीय नगरवासी अथवा देहाती है, जिसके कान में अज़ान के शब्द न पड़े होंगे और जिसकी बस्ती अथवा नगर में मस्जिद न होगी। मस्जिदों के पास से गुज़रते, मुसलमानों के घर आते जाते और यात्रा करते हुए भी हमने मुसलमानों को नमाज़ पढ़ते बहुधा देखा है, परन्तु शायद कुछ लोगों को जीवन भर इसका अवसर न मिला होगा कि वह नमाज़ को ध्यानपूर्वक देखें, या किसी मुसलमान भाई से पूछें कि उनके यहाँ नमाज़ किस प्रकार पढ़ी जाती है। अतः इसके बारे में या तो हमें कुछ ज्ञात नहीं या हमारा ज्ञान सरसरी अथवा अपूर्ण है[1]।

**अज़ान[2]–**

सर्वप्रथम अज़ान को ही लीजिये जो दिन में पाँच बार उच्च स्वर में कही जाती है और जिसकी गूँज से कोई गाँव, कोई नगर और मिली जुली आबादी का कोई मुहल्ला मुश्किल से अनभिज्ञ होगा।

पहले अज़ान के शब्द सुनिये फिर उनका अर्थ जानिये:–

अल्लाहु अकबर–अल्लाहु अकबर = अल्लाह सबसे बड़ा है–अल्लाह सबसे बड़ा है,

अल्लाहु अकबर–अल्लाहु अकबर = अल्लाह सबसे बड़ा है–अल्लाह सबसे बड़ा है।

अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह = मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं,

अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह = मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं।

अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह = मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के पैग़म्बर हैं,

अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह = मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के पैग़म्बर हैं।

हय्या अलस्सलाह = आओ नमाज़ को,

हय्या अलस्सलाह = आओ नमाज़ को।

---

1. इस बारे में हमको विचित्र अनुभव हुए। एक बार स्वयं इन पंक्तियों का लेखक, रेल की एक यात्रा में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ रहा था। नमाज़ में बार बार अल्लाहु अकबर के शब्द कहे जाते थे, और इसी से नमाज़ी रुकू और सजदे करते हैं। मैं जब नमाज़ पूरी कर चुका, तो एक हिन्दू भाई जो साथ में यात्रा कर रहे थे और शिक्षित थे, पूछने लगे कि आप लोग जो नमाज़ में अल्लाहु अकबर कहते हैं, तो अकबर से तात्पर्य अकबर बादशाह है? बिल्कुल इसी प्रकार की एक घटना हमारे एक मित्र के साथ घटी, जिनसे यह प्रश्न इतिहास के एक प्रोफेसर ने किया। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारी एक दूसरे के प्रति जानकारी कितनी अपूर्ण है।

2. खेद के साथ कहना पड़ता है कि हिन्दुस्तान के एक पथ के संचालक 'अज़ान' को ईश्वर को पुकारना समझते हैं, और उसी कारण, मुसलमानों को परामर्श देते हैं कि इतने ऊँचे स्वर में ख़ुदा को क्यों पुकारते हो, क्या ईश्वर बहरा है (नऊज़ बिल्लाह मिन्हु) अनु0

हय्या अलल फ़लाह = आओ कामयाबी (कल्याण) को,

हय्या अलल फ़लाह = आओ कामयाबी (कल्याण) को।

अल्लाहु अकबर= अल्लाह सबसे बड़ा है,

अल्लाहु अकबर= अल्लाह सबसे बड़ा है।

ला इलाह इल्लल्लाह= अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नही।

**नमाज़ से पूर्व वुज़ू किया जाता है-** नमाज़ से पहले मुसलमान को वुज़ू करना होता है। वुज़ू पवित्रता की उस विशिष्ट विधि को कहते हैं जिसके बिना नमाज़ नहीं होती। वुज़ू में सर्व प्रथम पहुचों तक तीन बार[1] हाथ धोए जाते हैं, फिर तीन बार कुल्ली की जाती है, फिर तीन बार पानी से नाक साफ की जाती है, फिर तीन बार मुँह को माथे के बालों से ठुड्डी तक तथा एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक धोते हैं, फिर दाहिना हाथ कुहनियों समेत तीन बार धो कर, बायां हाथ कुहनियों समेत तीन बार धोते हैं, फिर एक बार सारे सर का मसह करते हैं अर्थात् हाथ भिगोकर सिर के बालों पर एक बार फेरते हैं, फिर दाहिना पैर गट्टों समेत तीन बार धोते हैं, फिर बायां पैर इसी प्रकार धोते हैं। मल, मूत्र तथा वायु के निकलने आदि से यह वुज़ू आवश्यक हो जाता है और इसके बिना नमाज़ नहीं होती। सो जाने से भी वुज़ू की आवश्यकता पड़ जाती है। एक वुज़ू से (यदि टूट न जाय) कई कई समय की नमाज़ पढ़ी जा सकती है। वुज़ू करने का प्रबन्ध सामान्यतः मस्जिदों में होता है, इसके लिए हौज़ या नल की टोटियां होती हैं। शुद्ध लोटों तथा बधनियों का भी प्रबन्ध होता है। बहुत से दीन दार मुसलमान अपने घरों से वुज़ू करके जाते हैं ताकि उनको अधिक सवाब मिले। बड़ी मस्जिदों में शीत काल में गरम पानी का भी प्रबन्ध होता है।

**मस्जिद में मुसलमान का नित्य कार्य एवं विधि-**

मस्जिद जाकर यदि वुज़ू है तो उसी वक्त, नहीं तो वुज़ू करके आदमी सुन्नत या नफ़्ल में व्यस्त हो जाता है, यदि वह इससे निवृत्त हो चुका है तो शान्ति पूर्वक नमाज़ की प्रतीक्षा में बैठ जाता है, या कुरआन मजीद की तिलावत (पाठ) या जप में लग जाता है। जमाअत (सामूहिक नमाज़) का समय आता है तो पहले इक़ामत कही जाती है, जो जमाअत के आरम्भ होने का एलान है। इसमें सब वही शब्द होते हैं जो अज़ान में कहे जाते हैं, केवल "हय्या अलल फ़हाल" के बाद दो वाक्य अधिक होते हैं।

क़द क़ा मतिस्सलाह= नमाज़ खड़ी होने जा रही है,

क़द क़ा मतिस्सलाह= नमाज़ खड़ी होने जा रही है।

**सफ़ बन्दी (पंक्ति वद्ध तथा) इमाम व मुक़्तदी[1] की जमाअत-**

जो लोग मस्जिद में बिखरे हुए बैठे होते हैं या किसी शुभ कार्य में लगे होते हैं, सब पंक्ति में आकर खड़े हो जाते हैं। इक़ामत की समाप्ति पर इमाम जो मुहल्ले का कोई

1. तीन बार धोना सुन्नत है, वुज़ू दो या एक बार भी धोने से हो जाता है।

1. जमाअत से नमाज़ होने की दशा में इमाम आगे होता है, और पंक्ति में उसके पीछे खड़े लोग 'मुक़्तदी' कहलाते हैं। अनु0।

धार्मिक विद्वान या हाफ़िज़े कुरआन[1] या कोई पढ़ा लिखा मुसलमान होता है[2], तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहता हुआ कानों की लौ तक हाथ उठा कर नाभि पर हाथ बांध लेता है और नमाज़ आरम्भ कर देता है। इस प्रकार वह और मुक़तदी दास के समान हाथ बांधे हुए अपने मालिक के सामने खड़े हो जाते हैं। इमाम मुक़तदियों (पीछे पंक्ति में खड़े नमाज़ियों) के आगे बीच में खड़ा होता है। कुछ क्षण इमाम तथा मुकतदी मौन रह कर एक दुआ पढ़ते हैं, जिसका अर्थ अग्रलिखित है:—

ऐ अल्लाह तू गुणों वाला है और तेरा नाम शुभ है और तू श्रेष्ठ महिमा वाला है, और तेरे अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं।

1. जिसको सम्पूर्ण कुरआन कंठस्थ हो।
2. इस्लाम में इमामों तथा आलिमों का कोई विशिष्ट वर्ग (Preist class ) नहीं जिनके बिना मुसलमानों की इबादतें (उपासनायें) न अदा हो सकें। कोई योग्य मुसलमान इस कर्तव्य का पालन कर सकता है, लेकिन अब व्यवस्था और सुविधा को देखते हुए बहुधा मस्जिदों में इमाम तथा मुअज्ज़िन नियुक्त हैं और चूंकि इस कार्य हेतु वे अपने को अर्पण कर देते हैं, अतः मुहल्ले, या मुसलमानों की संस्था अथवा वक्फ़ की ओर से उन्हें वेतन दिया जाता है।

❖❖❖

**प्यारे नबी की प्यारी.....**

हुज़ूरे अक़सद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाजिर हुआ और अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं जंग करूं या इस्लाम कबूल करूं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया इस्लाम लाओ फिर जंग करो तो वह मुसलमान हुआ और लड़ाई में शरीक हुआ और फिर शहीद हो गया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया काम थोड़ा किया और सवाब बहुत पाया। (बुखारी—मुस्लिम)

**कर्ज की अहमियत–**

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया क़र्ज के अलावा शहीद की हर खता अल्लाह तआला माफ फरमा देगा। (मुस्लिम)

और एक रिवायत में है कि अल्लाह के रास्ते में जंग कर्ज के अलावा हर खता को मिटा देती है।

हज़रत अबू क़तादा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम लोगों के पास खड़े हुए थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिहाद का ज़िक्र किया और फरमाया अल्लाह के रास्ते में जंग करना और उस पर ईमान लाना बेहतरीन आमाल हैं। एक शख्स ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह यह बताइये कि अगर मैं अल्लाह के रास्ते में मारा जाऊँ तो क्या मेरी सब खतायें माफ हो जायेंगी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हाँ, लेकिन तुम इस प्रकार मारे जाओ कि सब्र व सवाब की तलब हो और आगे बढ़ते जाओ पीछे न मुड़ो, फिर फरमाया तुमने क्या सवाल किया था, अर्ज किया कि मुझे यह बताइये कि अगर मैं अल्लाह की राह में मारा जाऊँ तो क्या मेरी सब खतायें माफ हो जायेंगी, फरमाया, हाँ, मगर इस सूरत में कि तुम सब्र करते हुए सवाब की तलब में आगे बढ़ते हुए क़त्ल किये जाओ मगर कर्ज फिर भी मॉफ न होगा, मुझसे जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने यही कहा है। (मुस्लिम)

❖❖❖

(पिछले अंक से आगे)

# तबलीगे नबवी सल्ल० उसके उसूल और उसकी कामयाबी के असबाब

## (हुज़ूर सल्ल० के धर्म प्रसारण के नियम और उनकी सफलता के कारण)

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी

—अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह०

दावते अक़्लः-

इस्लाम ने दावत व तबलीग के जो उसूल बताये हैं उनका लाज़िमी नतीजा यह होना चाहिए कि वह एक दलील वाला और अक़्ली मज़हब हो, बगैर उसके हिकमत व दानिशमंदी, वअ़ज़ व नसीहत और जिदाल व मुनाजिरे की बुन्याद क़ाइम नहीं रह सकती, इस बिना पर दुन्या के तमाम मज़हबों की तारीख में नबुव्वते मुहम्मदिया सब से पहली खुदाई आवाज़ है, जिसने हाकिमाना क़ानून (तौरात) या सिर्फ लफ़्ज़ों के उलट फेर (इंजील) या राजाओं के अहकाम (वेद) की जगह अक़्ले इंसानी को मुखातिब किया, गौर व फिक्र की दावत दी, सोचने समझने का मुतालबा किया, उसने अपनी हर तालीम के साथ अपनी तालीम की खूबी, मसलहत और हिकमत खुद ज़ाहिर की और बार बार मुखालिफों को आयाते इलाही में गौर व फिक्र की हिदायत की फरमाया "आप कह दीजिए ऐ पैग़म्बर! कि तुम्हारे पास कोई (यक़ीनी) इल्म है तो उसको हम पर जाहिर करो, तुम तो गुमान ही के पीछे चलते हो और तुम तो अटकल ही लगाते हो, कह दीजिए कि सिर्फ अल्लाह ही की दलील ऐसी है जो (दिलों तक) पहुंचने वाली है" (सू–रए–अनआम 6/149–150) नीज़ इरशाद हुआ "ताकि जो हलाक हो, वह दलील से हलाक हो और जो जीता रहे वह दलील से जिये, और अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है (सू–रए–अंफाल 8/42) गफलत करने वाले काफिरों के बारे में अल्लाह ने इरशाद फरमाया "और आसमानों में और ज़मीन में (अल्लाह की तौहीद की) कितनी निशानियाँ (दलीलें) हैं जिन से वह गुज़रते हैं लेकिन (उनसे नसीहत हासिल करने की जगह) उनसे मुँह फेर लेते हैं (सू–रए–यूसुफ 12/105) गौर फिक्र करने वाले ईमान वालों की तारीफ में फरमाया "बिला शुब्हा आसमानों और ज़मीन की रचनाओं और रात और दिन के उलट फेर में उन अक़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं, जो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह को याद करते रहते हैं, और आसमानों और ज़मीन (की तमाम चीज़ों) की बनावट के बारे में गौर करते रहते हैं, (वह बेइख्तियार बोल उठते हैं) ऐ हमारे रब! तू ने यह सब बेकार नही बनाया है। (सू–रए–आले इमरान 3/190–191)

इससे जियादा अक़्ली और इल्मी दलील की दावत और क्या होगी, मगर बहरहाल यह खारिजी दलील थी, अन्दरूनी दलील की भी उसने दावत दी, फरमाया "और खुद तुम्हारे अंदर भी अल्लाह की निशानियां है,

क्या तुम देखते नहीं (सू–रए–ज़ारियात 51:21) सहीफये मुहम्मदी की निस्बत हर जगह यह अल्फाज़ फरमाये "यह बसीरत और नसीहत है, हर (अल्लाह की तरफ) मुतवज्जिह होने वाले बन्दे के लिए" (सू–रए–आराफ 7:203) यह लोगों के लिए बसीरतें हैं" (सू–रए–जासिया 45:20) क्या यह लोग कुर्आन में गौर नहीं करते, या उन के दिलों पर ताले लगे हैं (सू–रए–मुहम्मद 47:24) हिकमत वाले कुर्आन की क़सम" (सू–रए–यासीन 36:2) यह हिकमत वाली (बातों से भरी हुई) किताब की आयतें हैं (सू–रए–यूनुस 10:1, व सू–रए–लुक़मान 31:2) न सिर्फ इसी क़द्र बल्कि खुदा का वजूद, तौहीद, रिसालत, कियामत, जज़ा व सज़ा, इबादत, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, अखलाक़ आदि हर तालीम की सीख देते समय उसने उस की सच्चाई की अक़्ली दलीलें पेश की हैं, और हर मसअ़ले की मसलहतें व हिकमतें अलल एलान ज़ाहिर की हैं अगले पेजों में हर क़दम पर उसकी दलीलें आप को मिलेंगी।

**मज़हब में ज़बरदस्ती नही–**

यह वह सच्चाई है जिसकी आवाज आज हर दरो दीवार से आती है, लेकिन शायद लोगों को मालूम नही कि दुन्या में इस हक़ीकत का एलान सबसे पहले मुहम्मद सल्ल0 ही की ज़बाने मुबारक से हुआ, और जाहिर है कि जो मज़हब अपने प्रचार के लिए सिर्फ दावतो तबलीग का रास्ता रखता हो, जिसने उसके उसूल बताये हों, जिसने अक़्ल व बसीरत और गौर व फिक्र का, हर मामले में लोगों से मुतालबा किया हो, हर कदम पर अक़्ली दलील और मसलहत व हिकमत का इज़हार किया हो, वह क्यों कर जब्र व इकराह और ज़बरदस्ती के तरीके को इख़्तियार कर सकता था, इस्लाम ने न सिर्फ यह कि मजहब की जब्री प्रचार को ना पसंद किया बल्कि उसका फलसफ़ा बताया कि मज़हब ज़बरदस्ती की चीज़ नहीं, इस्लाम में मज़हब का पहला भाग ईमान है, ईमान यकीन का नाम है और दुन्या की कोई ताकत किसी के दिल में यकीन का एक ज़र्रा भी ज़ोर जबरदस्ती से पैदा नही कर सकती, बल्कि तेज़ से तेज़ तलवार की नोक भी किसी की दिल की तख्ती पर यकीन का कोई हर्फ नक़्श नहीं कर सकती, फरमाया "दीन (इख़्तियार करने) में कोई ज़बरदस्ती नहीं, हिदायत गुमराही से अलग हो चुकी (सू–रए–बकरः 2:256) यह वह अज़ीमुश्शान हक़ीक़त है जिसकी तलकीन इंसानों को सिर्फ मुहम्मद सल्ल0 के जरिए से हुई, दूसरी जगह फरमाया "और कह दीजिए कि हक़ तुम्हारे रब की तरफ से है, तो जो चाहे कबूल करे और जो चाहे इंकार करे। (सू–रए–कह्फ 18:29) ईमान और कुफ्र इन दो में से किसी एक को इख़्तियार करने पर कोई ज़बरदस्ती नही है, अक़्ल व बसीरत वाले उसे खुद कबूल करेंगे और ना समझ उससे महरूम रहेंगे, इसीलिए बार बार यह वाजेह

किया गया कि रसूल का काम लोगों तक अल्लाह का पैगाम पहुंचा देना है, ज़बरदस्ती मनवाना नहीं हमारे रसूल पर तो यही फर्ज है कि वह साफ साफ हमारा पैगाम पहुंचा दें। (सू–रए–माइदा 5:92) आंहजरत सल्ल0 को जो कुरैश के इंकार व मुखालफत से बहुत जियादा ग़मगीन थे, तसकीन दी गयी। ऐ पैग़म्बर! आपका फर्ज सिर्फ प्याम पहुंचा देना है (सू–रए–शोरा 42:48)। ऐ पैग़म्बर! आप तो नसीहत करने वाले हैं, उन पर दरोगा बना कर नही भेजे गये हैं। (सू–रए–गाशिया 88:21,22) दूसरी जगह फरमाया – फिर अगर वह इस्लाम की दावत को कबूल करने से इंकार करें तो ऐ पैग़म्बर! हमने आपको उन प्रर निगरां बना कर नहीं भेजा, आपके जिम्मे सिर्फ पैग़ाम पहुंचा देना है (सू–रए–शोरा 42:48) किसी दीन को ज़बरदस्ती फैलाना इस्लाम की निगाह में एक ऐसा काम है जिससे रसूल की शान को उसने बहुत बुलन्द समझा है, फरमायाः अगर आपका रब चाहता कि (लोगों को जबरदस्ती मोमिन बना दे) तो ज़मीन के सब लोग ईमान ले आते, तो ऐ पैग़म्बर! क्या आप लोगों पर दबाव डालेंगे यहां तक कि वह ईमान कबूल कर लें।

(सू–रए–यूनुस 10:99)।

इस्लाम में हक की हिमायत और बातिल की शिकस्त के लिए लड़ना जाइज़ है, और आँ हजरत सल्ल0 को भी मजबूरन लड़ना पड़ा, उससे मुखालिफों ने यह नतीजा निकाला है कि यह लड़ाई सिर्फ इसलिए थी कि इस्लाम को तलवार के ज़ोर से लोगों में फैलाया जाये, हालांकि कुर्आन में एक आयत भी ऐसी नही जिसमें किसी काफिर को जबरदस्ती मुसलमान बनाने का हुक्म हो, और न आँ हज़रत सल्ल0 की सीरत में कोई वाकिया ऐसा है, जिसमें किसी काफिर को जबरदस्ती तलवार के ज़ोर से मुसलमान बनाया गया, बल्कि अगर है तो यह हैः और अगर मुश्रिकों में से कोई आपसे पनाह का तालिब हो तो उसको पनाह दे दीजिये ताकि वह अल्लाह का कलाम सुन ले, फिर उसको उसकी मामून जगह पर पहुंचा दीजिये, क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो जानते नहीं।

(सू–रए–तौबाः 9–6)।

यह नहीं कहा कि जब तक वह मुसलमान न हो जाये उसको पनाह न दो, बल्कि यह फरमाया कि उसको पनाह दे कर उसकी जाये पनाह तक पहुंचा दिया जाये और उसको कलामे इलाही सुनाया जाये ताकि उसको गौर व फिक्र का मौक़ा मिले, जाहिर है कि जो मुश्रिक इस तरह मुसलमान होगा, उसके तबदीले मज़हब का प्रेरक तलवार की जगह और कोई चीज़ (प्यामे हक) होगी।

सच्चाई यह है कि जिहाद के जायज करने की वजह मज़लूमों की हिमायत, देश निकालों का हक दिलाने, हज का रास्ता खोलने और अक़ीदे की आज़ादी हासिल करने के लिए हुई थी, जैसा कि उसका तफसीली बयान

किताब में आगे आयेगा, कुर्आन की इस आयत में "और उनसे लड़ो यहाँ तक कि फितना न रहे और दीन (इताअत) मुकम्मल तौर पर अल्लाह के लिए हो जाये।

(सू–रए–अंफाल– 8:39)

फितने से मुराद अकीदे और मजहब की आज़ादी न होना है, हजरत इब्ने उमर रज़ि0 सहाब–ए–किराम रज़ि0 की खाना जंगियों (गृह समरों) में सम्मिलित न थे, एक आदमी ने आ कर उनसे कहा कि क्या खुदा ने फितने को मिटाने के लिए लड़ने का हुक्म नहीं दिया, और ऊपर वाली आयत पेश की, उन्होंने जवाब दिया कि हम फर्ज आँहज़रत सल्ल0 के ज़माने में अदा कर चुके, जब मुसलमान कम थे, तो इंसान अपने दीन के कारण से फितने में मुबतला किया जाता था, उसको लोग या मार डालते थे या क़ैद कर लेते थे, यहाँ तक कि मुसलमानों की तादाद बहुत बढ़ गई तो फिर फितना बाक़ी न रहा। (बुख़ारी–2/670)

❖❖❖

**औलिया उल्लाह की.....**

हम सबको अपनी अवज्ञा से सुरक्षित रखे और अपनी प्रसन्नता वाले कार्य करने का सामर्थ्य दे। आमीन!

**अल्लाह के औलिया और हमारा व्यवहार–** हम को चाहिए कि हम औलियाउल्लाह का आदर व सम्मान करें, उनकी संगत से लाभ उठाएं, उनसे अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातें सीखें, उनसे अल्लाह का प्रेम सीखें, उनसे दुआएं कराएं याद रहे औलियाउल्लाह जीवित हों या मृत्यु प्राप्त उनसे दुआ न मांगे दुआ केवल अल्लाह से मांगी जाती है जो अल्लाह के वली इस संसार से जा चुके हैं, उनको जब भी याद करें उन के लिए अल्लाह तआला से दुआ मांगे, उन्होंने जो किताब व सुन्नत के फैलाने का काम किया हो उससे लोगों को अवगत कराएं, उन्होंने इस्लाम से अपरिचित लोगों में इस्लाम के परिचय का जो काम किया हो उसकी सराहना करते हुए गैरों में इस्लाम के परिचय का काम जारी रखें, साथ ही अपने भाई जो अपनी अज्ञानता के कारण सत्यमार्ग से दूर जा पड़े हैं उनको अच्छी विधि से समझा कर शुद्ध इस्लाम पर लाने का निरंतर प्रयास करते रहें, यह बड़ी भूल है कि जो हमारे महा पुरुंषों ने अपने अथक प्रयासों से करोड़ों को इस्लाम से जोड़ा था उसको हम शैतानों को लूटने के लिए छोड़ दें और गैरों में इस्लाम पहुंचाने में व्यस्त रहें निसन्देह दोनों कार्य आवश्यक हैं, गैरों में इस्लाम का परिचय देना और अपनों को नफ़्स व शैतान से बचा कर इस्लाम से जोड़े रखना।

ऐ अल्लाह अपना प्रेम प्रदान कर, अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का प्रेम प्रदान कर, उन सब लोगों का प्रेम प्रदान कर जो तुझ से प्रेम रखते हैं तथा उन कार्यों का प्रेम और उनको अपनाने की शक्ति प्रदान कर जिनसे तेरा प्रेम प्राप्त हो सके। आमीन!

❖❖❖

# हज का सौभाग्य प्राप्त करने वालों की सेवा में

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

अल्लाह का शुक्र है कि इस वर्ष हमारे देश भारत से लगभग एक लाख छत्तीस हजार भाग्यवानों ने हज का सौभाग्य प्राप्त किया। हमारे हाजी डेढ़ महीनों तक इस्लामी शिक्षाओं के प्रशिक्षण में रहे, हर समय अल्लाह को याद रखना, कभी धीरे कभी जोर से अल्लाह को पुकारना, समय पर नमाज़ पढ़ना, हर समय स्वक्ष रहना, भोग विलास से दूर रहना, लड़ाई, झगड़े और बुरी बातों से पूरी तरह बचना, अल्लाह के आदेशों का इस प्रकार पालन करना कि आदेश हुआ अच्छे कपड़े बदल कर केवल दो चादरें पहन लो, पहन लिया, सुगन्ध न लगाओ, न लगाया, किसी को कष्ट न दो, न दिया यहाँ तक कि जुएं, चीलर भी न मारें, आदेश हुआ मिना जाओ, चले गये, अरफात जाओ, चले गये, वहाँ मगरिब का समय आ जाने पर भी आदेश हुआ कि मगरिब पढ़े बिना मिना से मुज़दलफा जाओ; चल दिये और आदेशानुसार वहाँ मगरिब व इशा एक साथ पढ़ी, फज्र पढ़ कर आदेश हुआ मिना जाओ, चल दिये, आदेश हुआ बड़े शैतान को सात कनकरियाँ मारो, मार दिया, आदेश हुआ कुरबानी करो, कर दिया, आदेश हुआ सर मुंडाओ मुंडा लिया, हुक्म हुआ नहा धोकर कपड़े बदल लो, बदल लिया, आदेश हुआ हरम जा कर काबे का तवाफ करो, कर लिया, आदेश हुआ 11, 12 को तीनों शैतानों को कनकरियाँ मारो, मार लिया, तात्पर्य यह कि पूरा समय अल्लाह की याद और अल्लाह के आदेशों पर पालन करते हुए बिताया, न किसी को कष्ट दिया न सताया, अपितु जहाँ तक हो सकता दूसरों की मदद की। हज पूरा कर के मदीना तय्यिबा गये प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में नमाज़ें पढ़ीं, रौज़े पर हाजरी दी सलाम पेश किया, जब तक वहाँ रहे ज़ियादा वक़्त मस्जिद में बिताया जितना हो सका दुरूद व सलाम पढ़ा। इस लम्बे प्रशिक्षण में जीवन में बड़ा बदलाव आया।

हमारे जो भाई इस लम्बे प्रशिक्षण के पश्चात अपने वतन लौटे हैं उनका कर्तव्य है कि वह जीवन के इस बदलाव को बाकी रखें, नमाज़ों में कोताही न हो जकात की अदायगी में कोताही न हो, रमजान के रोज़ों में सुस्ती न हो, गरीबों की मदद करें, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों को अपनायें और फैलायें, दीन की बातें लोगों को सिखायें, बच्चों को दीनी शिक्षा देने के लिए मदरसे काइम करें, अपनों और गैरों का अंतर मिटा कर अपने सदव्यवहार से ऐसा प्रभावित करें कि लोग चाहें कि सारे मुसलमान इसी आचरण के हो जाते और हमारे आचरण भी ऐसे ही हो जाते जैसे इन हाजी साहब के हैं।

शेष पृष्ठ.....28....पर

नवम्बर अंक से आगे

# इख़्लास और उसके बरकात व फायदे

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

**तासीरे सुहबत के कुछ वाकिआत–**

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह0 जब छोटे थे करीब 4 साल के तो हजरत सै0 अहमद शहीद रह0 उस इलाके में तशरीफ ले गये, उस समय उनको हज़रत सै0 साहब की गोद में दिया गया, और सै0 साहब रह0 ने तबर्रुक़न बैअ़त भी फरमा लिया, उसके असरात देखिये कि फिर हाजी साहब रह0 हाजी साहब बन गये क्योंकि सै0 साहब के पास उनके शैख मियां जी नूर मो0 साहब झनझानवी और उनके शैख शाह अब्दुर्ररहीम विलायती जो सै0 साहब रह0 के खलीफा थे, रहे जब हाजी साब ने उनकी सुहबत इख्तियार की तो अल्लाह ने उनको वह सलाहियत अता फरमाई कि मौ0 थानवी रह0 से किसी ने पूछा कि हज़रत, हाजी साहब रह0 तो आपसे इल्म में कम हैं लेकिन आप उनके पास हर समय जाना चाहते हैं? तो फरमाया कि हाँ और लोग तो बताते हैं हाजी साहब पहुँचा देते हैं यह फर्क है इसलिए उनके पास जाते हैं ऐसे ही एक दफा हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह0 अपनी मस्जिद में तशरीफ लाये तो एक देहाती वुजू कर रहा था मौलाना ने उसको देखा तो खड़े हो गये और बाज मुरीदीन से कहा कि जब यह वुजू कर चुकें तो इनको मुझ से मिला देना, नमाज़ हो गयी, नमाज़ के बाद उन को बुलाया और पूछा कि तुम क्या करते हो? कहा कुछ नहीं खेती किसानी करता हूँ, अल्लाह अल्लाह करता हूँ, कहा नहीं कुछ और बताओ! अल्लाह अल्लाह के असरात को मैं समझता हूँ कि कैसे पड़ते हैं, नमाज़ पढ़ने के असरात को भी मैं जानता हूँ, लेकिन तुम्हारे अन्दर कुछ और बात है, क्या कोई वाकिया तुम्हारे साथ पेश आया है? उन्होंने कहा कि हज़रत सै0 अहमद शहीद रह0 एक बार हमारे इलाके में आये हुए थे मैं छोटा सा था, मैं लोगों के बीच से निकलता हुआ उनके सामने जा कर खड़ा हो गया, उनकी नज़र मुझ पर पड़ रही थी। मौ0 गंगोही रह0 ने फरमाया बात समझ में आ गयी, उसी का असर है कि तुम्हारे अन्दर से एक नूर निकल रहा है जो आसमान तक जा रहा है, तो मालूम हुआ कि आदमी जितना ताकतवर होगा उतने ही असरात पड़ते हैं, वह देहाती थे लेकिन सुन्नत पर ऐसे जमे हुए थे कि कोई सुन्नत उनसे नहीं छूटती थी, हज़रत सै0 साहब रह0 के असरात में से खास असर यह था कि जो भी उनके हाथ में हाथ देता था उसकी काया पलट जाती थी उस आदमी के दिल की कैफियत बदल जाती थी, यह सुहबत का असर होता है। हदीस में है कि बाज लोगों की नज़र इतनी बुरी होती है कि सही व तंदुरुस्त को देख

लें तो बीमार हो जाये ऐसे ही जो अल्लाह के नेक बन्दे होते हैं उनकी एक नज़र से दिल बदल जाते हैं और शर्र से खैर की तरफ झुक जाते हैं और उनको निस्बत हासिल हो जाती है। निस्बत का मतलब यह होता है कि फिर आदमी इधर उधर भटकता नहीं है। मौलाना मुहम्मद अहमद प्रतापगढ़ी रह0 ने इसको समझाने के लिए यह शेर कहा है–

निस्बत इसी का नाम है
निस्बत इसी का नाम।
उनकी गली को छोड़ के
जाने न पाइये।।

निस्बत का यह मतलब नहीं होता है कि आदमी भागना न चाहे, भागना चाहेगा लेकिन ऐसे कारण पैदा हो जायेंगे कि भाग नहीं पायेगा, इसी का नाम निस्बत है, जब अल्लाह वालों के पास रहता है तो अल्लाह तआला उसकी हिफाज़त करता है। हदीस शरीफ में आता है कि मैं उसका कान बन जाता हूं जिससे वह सुनता है, उसका हाथ बन जाता हूं जिससे वह पकड़ता है, पैर बन जाता हूं जिससे वह चलता है, मांगता है तो देता हूं, पनाह चाहता है तो पनाह देता हूं, इसी लिए हमारे उलमा फरमाते हैं कि औलिया महफूज़ होते हैं और महफूज का मतलब बाज़ लोग गलत समझ लेते हैं। इसका मतलब नहीं कि गुनाह नहीं होता, बल्कि मतलब यह है कि गुनाह पर डटे नहीं रहते, जिद नहीं करते तौबा की तौफीक मिल जाती है।

मासूम सिर्फ अंबिया अलैहिस्सलाम की जात है और कोई नहीं, जब आदमी इख्लास के साथ नेक लोगों की सुहबत में रहता है तो उसको यह निस्बत कभी चंद मिन्टों में हासिल हो जाती है कभी कई सालों में कुछ हासिल नहीं होता, मौलाना करामत अली जौनपुरी रह0 तकिया राय बरेली में आकर हज़रत सै0 साहब से बैअत हुए थे और सिर्फ 18 दिन आपके पास थे, सैय्यद साहब रह0 ने 18 दिन के बाद फरमाया "मौलाना काम हो गया" यानी 18 दिन में ही सुहबत की बरकतें हासिल हो गयीं थीं और आप कामिल हो गये थे सैय्यद साहब ने फरमाया, मौलाना जाइये और बंगाल में काम कीजिये फिर मौलाना, कुछ दिन अपने शौक से ठहरे, उसके बाद बंगाल तशरीफ ले गये, न वह बंगाल के थे न बंगला जानते थे, 18 साल के बाद अपने घर अपने वालिद साहब रह0 से मिलने आये और फिर दोबारा सब को वहीं ले कर चले गये और 45 साल तक वहीं रहे और पूरा बंगाल बदल के रख दिया। अब यह मज़बूत सुहबत का असर है कि चंद दिन में काम बन गया। लेकिन उसके लिए आदाब चाहिये, बेअदबी न होनी चाहिए कि हराम खा रहे हैं तो सुहबत का असर कहाँ होगा, और गीबत कर रहे हैं तो सुहबत का असर क्या होगा। महब्बत के साथ, इख्लास के साथ, अज़मत के साथ अगर सिकी अल्लाह वाले के पास रहे तो फाइदा होता है वरना अगर एक हजार साल रहे तो भी फाइदा नहीं होगा।

शेष पृष्ठ.....28.....पर

# शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० के एक प्रवचन का अनुवाद

—इदारा

**परिचय**— हज़रत शेख़, मुहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी की गिनती बड़े औलिया उल्लाह में होती है, वह दो रमज़ान 470 हि0 में ईरान के शहर जीलान में पैदा हुए बाप का नाम अबू सालेह था, वह हज़रत हसन रज़ि0 के खानदान से हैं 488 हि0 में बग़दाद गये वहाँ बड़े बड़े उस्तादों से दीन पढ़ कर उस्ताद हो गये, हज़रत अबुलखैर हम्माद बिन मुस्लिम अद्दय्यास के मुरीद हुये फिर क़ाज़ी अबू सईद मखज़ूमी से प्रशिक्षण प्राप्त करके उनके खलीफ़ा हुए और लोगों को मुरीद करके उनकी इस्लाह करने लगे, वह तफसीर, हदीस और फ़िक्ह पढ़ाते और लोगों की अख़्लाक़ी इस्लाह भी करते आठ रबीउल अव्वल 561 हि0 में उनका देहान्त हुआ उनके प्रवचन तथा उपदेश बहुत प्रसिद्ध हैं यहाँ उनके एक प्रवचन का अनुवाद तथा भावार्थ संक्षेप में दिया जाता है वह अपने इस प्रवचन में कभी लोगों को संबोधित करते हैं तो कभी अपने प्रिय पुत्र को, इससे ज्ञात हुआ कि प्रवचन सुनने वालों में उनका पुत्र उपस्थित है। (शैख की पैदाइश और वफात की तारीखें इन्टरनेट से ली गई हैं)।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

लोगो! भाग्य (तक़्दीर) पर आपत्ति करना मौत है ऐकेश्वरवाद के विश्वास की मौत है इख़लास (निःस्वार्थ) की मौत है अल्लाह पर भरोसा करने की ईमान वाला हृदय, तक्दीर ज़ाहिर होने पर यह नही कहता कि यह क्यों हुआ और कैसे हुआ वह तो अल्लाह की तक्दीर पर केवल हाँ कहता है, उस पर राज़ी रहता है। मन का स्वभाव ही है कि वह अप्रिय तक्दीर का विरोध करे और उस पर झगड़े अतः जो व्यक्ति भलाई (खैर) चाहता है वह इतनी तपस्या (रियाजत) करे कि मन की बुराईयों से बच जाय मन की चाहतें तो बुराईयों ही पर उभारती हैं, परन्तु जब मन को तपस्या में तपाया जाता है तो वह पवित्र हो जाता है और उसे सन्तोष प्राप्त हो जाता है अर्थात वह नफ्से मुतमइन्नः (संतोष प्राप्त मन) हो जाता है उसमें बुराई नहीं रहती वह सम्पूर्ण भलाई बन जाता है, फिर वह पूर्णतया अल्लाह का आज्ञाकारी बन जाता है।

और अवज्ञा से बचने में सहयोगी बन जाता है, इसी परिस्थिति में आदेश होता है कि सन्तोष मन अपने रब की ओर लौट कि तू उससे प्रसन्न और वह तुझ से प्रसन्न है अब वह सिद्ध हो जाता है। अब वह अल्लाह के अतिरिक्त किसी से लगाव नहीं रखता और उसका संबंध अपने बाप अल्लाह के पैगम्बर इब्राहीम अलैहिस्सलाम से सिद्ध हो जाता है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मन अपनी चाहतों से मुक्त था आपका हृदय सन्तोष के उच्चतम स्थान पर विराजमान था अतएव जब आपको नमरूद की अग्नि में डाला जाने लगा तो अनेक शक्तियाँ आपके

पास आई और सहयोग के लिए अपने को प्रस्तुत किया प्रन्तु आप इन सब से कह रहे थे मुझे तुम्हारा सहयोग न चाहिए मेरा रब मेरे हाल से अवगत है अतः मुझे कुछ माँगने की आवश्यकता नहीं, अल्लाह पर भरोसे की इस शान पर अल्लाह की रहमत में उफान आया और अग्नि को आदेश हुआ "ऐ आग ठण्डी हो जा आनन्द देने वाली ठन्ड़क के साथ, इब्राहीम पर" जो व्यक्ति अल्लाह तआला के फ़ैसलों और उसकी तक़्दीर पर राजी रहता है उसको इस संसार में भी कदम कदम पर अल्लाह का विशेष सहयोग मिलता है और आखिरत (मरने पश्चात के जीवन) में अनगिनत पुरस्कार मिलेंगे अल्लाह तआला ने सूचित किया कि "सन्तोष करने वालों (अल्लाह वालों) को उनका पूरा बदला आखिरत में बहुत ज़ियादा दिया जायेगा" अल्लाह तआला से कोई चीज़ छुपी नहीं है सब कुछ उसके सामने है जो लोग अल्लाह के लिए कष्ट सहन करते हैं, अल्लाह के आज्ञा पालन में जो कष्ट आता है उसको सहन करते हैं उस सब को अल्लाह कृपा दृष्टि से देखता है। अल्लाह की राह में थोड़ी देर का कष्ट सहना अल्लाह वालों को वर्षों आनन्दित करता रहता है "निःसन्देह अल्लाह सन्तोषियों के साथ है" अतः उसके प्रेम तथा उसके आज्ञा पालन पर जमे रहो।

कुछ लोग सोचते हैं कि मरने से पहले तौबा कर लेंगे, अल्लाह से संबंध जोड़ लेंगे, यह उन की बड़ी भूल है तुरन्त जागृत हो जाओ, अचेतना छोड़ो मौत के आ जाने पर कुछ काम न बन सकेगा। देर किये बिना अपने दिलों को सुधार लो दिल ही ऐसी चीज़ है कि जब वह सुधर जाता है तो सारे हालात सुधर जाते हैं। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूचित किया कि "मनुष्य के शरीर में माँस का एक टुकड़ा है जब वह संवर जाता है तो उसका पूरा शरीर संवर जाता है और जब वह बिगड़ जाता है तो सारा शरीर बिगड़ जाता है और वह माँस का टुकड़ा दिल है"।

अल्लाह का भय, संयम, अल्लाह पर भरोसा, एकेश्वरवाद और निः स्वार्थता, कर्मों से दिल संवरता है अथवा दिल संवरने के यह चिन्ह हैं जब यह गुण न पाये जायें तो समझो हृदय बिगड़ा हुआ है। ऐ मेरे अल्लाह मेरे शरीर के सभी अंगों को अपना अज्ञाकारी बना और मेरे हृदय को अपना परिचय तथा प्रेम प्रदान कर और निः स्वार्थता के साथ पूरे जीवन इस पर जमाये रख, और हम को वह प्रदान कर जो तूने अपने प्रिय बन्दों को प्रदान किया (अर्थात सहा–बए–किराम) और मेरा हो जा जैसे उन का हो गया।

लोगो अल्लाह के हो जाओ, वैसे जैसे अल्लाह वाले उसके हो गये थे, यहाँ तक कि अल्लाह तुम्हारा हो जाये जैसे उन अल्लाह वालों का हो गया था, अगर तुम चाहते हो कि अल्लाह तुम्हारा हो जाये तो तुम अल्लाह के आज्ञाकारी हो जाओ और उसकी तक्दीर' (लिखे भाग)

पर आपत्ति न करो अपितु उस पर राजी रहो। उन अल्लाह वालों ने संसार से उतना ही लिया था जितने की उनको आवश्यकता थी वह सदैव आखिरत (मरने के बाद के जीवन) की भलाई चाहते रहे और उसके लिए सदैव अल्लाह के आदेशों का पालन करते रहे, उन्होंने पहले अपना सुधार किया फिर दूसरों के सुधार में लगे।

प्रिय पुत्र! पहले अपने को उपदेश देना चाहिए फिर दूसरों को, पहले अपने को सुधारें फिर दूसरों को, ऐसे व्यक्ति पर खेद है जो खुद डूब रहा हो और दूसरों को डूबने से बचाने का प्रयास करे, जो खुद देखता नहीं वह दूसरों को रास्ता कैसे दिखायेगा? लोगों को अल्लाह तआला से वही जोड़ सकता है जो स्वयं अल्लाह का परिचय और प्रेम प्राप्त कर चुका हो प्रिय पुत्र! अगर तू अल्लाह से प्रेम रखता है तो उसका आज्ञाकारी हो जा उसी से भय खा दूसरों से नहीं, उसकी तक्दीर पर तथा उसके कार्यों पर एतिराज (आपत्ति) मत कर इन बातों का संबंध हृदय से है न कि जीभ की बक बक से, अगर जुबान पर एकेश्वरवाद हो और मन में अनेकेश्वरवाद हो तो यह निफाक है खेद है, खेद है उस पर जो जुबान से संयमी बन रहा है परन्तु उसका मन अवज्ञाकारी है, जुबान से शुक्र अदा कर रहा है परन्तु मन में नाशुक्री है।

ऐसे लोगों से अल्लाह तआला कहता है कि मेरी ओर से तो तेरे लिए भलाई उतरती है। परन्तु खेद है कि तू अपने कुकर्मों से मेरी ओर बुराई भेजता है। अफसोस है कि तू कहता है। मैं अल्लाह का बन्दा हूँ परन्तु तू दूसरों का आज्ञाकारी रहता है। सच्चा मोमिन अल्लाह ही के लिए किसी से प्रेम करता है और अल्लाह ही की प्रसन्नता के लिए किसी से शत्रुता रखता है। वह अपने मन की चाहत पर नहीं अल्लाह के आदेशों पर चलता है। वह सदैव आखिरत की भलाई का इच्छुक रहता है। उसके सामने अल्लाह का ये आदेश रहता है। कि (लोग केवल अल्लाह की उपासना करें उसी के हो कर) अल्लाह ही खालिक व मालिक है अल्लाह को छोड़ कर किसी और से मांगने वाला मूर्ख है। अल्लाह तआला फरमाता है मेरे पास तमाम खज़ानों की कुंजियाँ हैं।

प्रिय पुत्र! धैर्य अपनाओ और अल्लाह के फैसलों से सहमत रहो और अल्लाह की उपासना में लगे रहो अल्लाह समस्याऐं दूर करेगा खुशहाली लायेगा और तक़दीर पर राज़ी रहो फिर तो अल्लाह तआला इतना देगा जिसे तू सोच भी नही सकता लोगो तक़दीर पर राज़ी रहो कि वह अल्लाह की बनाई हुई है।

प्रिय पुत्र! संय्यम को अनिवार्य जानो शरीअ़त के आदेशों को अपनाना अनिवार्य जानों मन की अवैध चाहतों को छोड़ो शैतान का कहना मत मानो, बुरे लोगों की संगत से दूर रहो ईमान वाला बन्दा इन सब बुराइयों के विरोध में रहता है। वह उनके मुक़ाबले मे असावधानी नहीं बरतता। ऐसे अल्लाह वालों का सोना भी इबादत है।

उनकी बातचीत भी अल्लाह के लिए होती है इसलिए वह भी इबादत है उनका चुप रहना भी अल्लाह के लिए होता है अतः वह भी इबादत है। कुरआन में आता है कि क़यामत के दिन मनुष्य के अंग बोलेंगे वह अल्लाह ही के हुक्म से बोलेंगे इसी प्रकार अल्लाह वालों को इस संसार में भी अपनी मर्ज़ी के अनुसार बोलने का सामर्थ्य देता है उलमा, अम्बिया हजरात के इल्म के वारिस हैं वह अम्बिया हजरात की बातें मख़लूक़ को पहुंचाते हैं इसी प्रकार अल्लाह वालों को अल्लाह तौफ़ीक़ देता है। और वह अम्बिया हजरात की बात लोगों तक पहुंचाते हैं।

लोगो! अल्लाह तआला के इन्आमात पर अल्लाह का शुक्र अदा करो! जो उसके पुरस्कारों को दूसरों की तरफ से समझता है उसको ग़ैर से समझ कर नाशुक्री का गुनाह मत करो।

प्रिय पुत्र! तुझको ऐसे संयम की आवश्यकता है जो तुझे एकान्त में भी और लोगों के बीच में भी गुनाहों और अल्लाह की अवज्ञा से बचाऐ और ध्यान की आवश्यकता है जो तुझे हर समय अल्लाह को याद दिलाता रहे।

तेरे लिए ये आवश्यक है कि तेरे अन्दर यह गुण पैदा हो फिर तेरे लिए यह आवश्यक है कि तू अपने मन की अवैध चाहतों से और शैतान से लड़ता रहे ताकि वह तुझे हर समय अल्लाह की याद के गुण से हटा न सके अल्लाह वालों की बरबादी अल्लाह के अतिरिक्त लोगों में ध्यान ले जाने से होती है उससे बचना अति आवश्यक है, अतः अल्लाह वाले अपने हृदय को बुराइयों से बचाने की ओर लगे रहते हैं इसलिए कि उनको अल्लाह की तरफ से लोगों को अल्लाह की तरफ बुलाने का काम करना है ऐसे में उनके मन का पवित्र तथा सुरक्षित रहना अति आवश्यक है। वह सदैव लोगों के हृदय, उनकी आत्माओं, जिन्नों और इन्सानों को पुकार पुकार कर कहते हैं कि ऐ लोगो अपने संयम तथा अपने भले कामों द्वारा अल्लाह की तरफ लपको और उसके हो जाओ अल्लाह वाले इन्हीं कामों में व्यस्त रहते हैं वह सदैव अल्लाह के बन्दों की इस्लाह में लगे रहते हैं।

प्रिय पुत्र! अपने मन की चाहतों से अपने को दूर रख और अल्लाह वालों के पैरों के नीचे की धूल बन जा, अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों को उनसे सीख कर उनकी पैरवी कर, यह आखरी जमाना है मुनाफिकों झूठों से दज्जालों से दूर रह जो उनके साथ बैठता है। उनकी संगत अपनाता है वह उनमें से है, अपने मन को आजाद मत छोड़, उसका हक उसको जरूर दे, शैतान दुशमन है तेरा दादा आदम अलैहिस्सलाम का तमाम इन्सानों का और तेरा, फिर तू क्यों उसकी बात मानता है अगर वह तुझ पर काबू पायेगा तो तुझको बरबाद कर देगा, संयम (तक़्वा) को अपना हथियार बना और तौहीद (एकेश्वरवाद) को, ध्यान ज्ञान को, और अल्लाह पर भरोसे (तवक्कुल) को अपना सहयोगी बना ताकि

तू शैतान को पराजित कर सके और उसका तुझ पर बस न चल सके।

प्रिय पुत्र! अपने मन से दुन्या का प्रेम निकाल कर केवल अल्लाह से प्रेम कर फिर अल्लाह की ओर से जितनी दुन्या लेने का हक दिया जाये उतनी दुन्या लेले। परन्तु अपने मन में अल्लाह का प्रेम और आखिरत की चिन्ता बाकी रख।

प्रिय पुत्र! अपने गुनाहों पर लज्जित हो और अल्लाह से क्षमा माँग, तौबा कर यह तौबा ज़बान से भी हो और मन से भी, शरीअ़त के आदेशों को अपना कर अपने मन का तज़किया (शुद्धिकरण) करके मन द्वारा अल्लाह का परिचय प्राप्त कर और इस प्रकार सत्य मार्ग (राहे मुस्तकीम) प्राप्त कर। ऐसा अल्लाह का बन्दा जब अपने रब को याद करता है तो शैतानी चालों से सुरक्षति हो जाता है और शैतान उससे भाग खड़ा होता है।

प्रिय पुत्र! जब शरीअत के आदेशों पर चलने में रुकावटें आयें, कष्ट आयें तो उनका धैर्य (सब्र) के साथ मुकाबिला कर और हक पर जमा रह, अल्लाह की मदद आयेगी और जब अल्लाह की मदद आ जाये तो अल्लाह का शुक्र अदा कर। मोमिन जहन्नम के तसव्वुर (कल्पना) से भी कांप जाता है और उसका दिल फटने लगता है फिर वह अल्लाह की पनाह (शरण) माँगता है तो अल्लाह तआला उसके मन को शान्ति देता है।

प्रिय पुत्र! तेरी चिन्ता केवल यह होना चाहिए कि अल्लाह तुझ से राजी रहे और अल्लाह की रजा उसके प्रेम और उसके आज्ञा पालन में है तू खाने, कपड़े, रहने और शादी विवाह की चिन्ता में न रह अल्लाह की आज्ञा पालन में उसके आदेशों के अंतरगत यह सब चीज़ें भी प्राप्त हो जायेंगी। तू सदैव अपने को हर दिन इस प्रकार समझ कि तेरे जीवन का यह अन्तिम दिन है जो कुछ कमाना है आखिरत के लिए आज ही कमा ले, मौत का फरिश्ता किसी भी वक्त आ सकता है। वह शख्स जो अल्लाह के इन्आमात (पुरुस्कारों) के समय अल्लाह को याद रखता है परन्तु परीक्षा के समय चिल्ला उठता है, वावेला मचाता है, अल्लाह को भूल जाता है वह महब्बत के दावे में झूठा है सच्चा प्रेमी वह है जो खुशहाली (समृद्धता) में अल्लाह को उसके शुक्र के साथ याद रखता है और परीक्षा के कष्टों में सब्र के साथ अल्लाह को याद रखता है। एक शख्स अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहा, मैं आपसे प्रेम रखता हूँ, आपने उससे कहा तो फिर दीनता (फक्र) झेलने को तैयार हो जा। एक दूसरा शख़्स नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहा, मैं अल्लाह से प्रेम रखता हूं, आपने उससे कहा, तो फिर परीक्षा के कष्टों को सहन करने के लिए तैयार हो जा, एक बुजुर्ग का कहना है कि अल्लाह के वलियों को बराबर आजमाया और जाँचा जाता है, अल्लाह तआला उनको सब्र (धैर्य) का पुरुस्कार, प्रदान करता है, बला (परीक्षा) व फक्र (दीनता) की हालत में शरीअ़त

पर जमे रहने को विलायत (ईश भक्ति) की पहचान बना दी गई है।

ऐ अल्लाह हम को दुन्या की भी भलाई दे और आखिरत की भी और हमको जहन्नम की आग से बचा ले आमीन!

प्रिय पाठको! मैने शेख के प्रवचन अरबी में भी पढ़े हैं और उनका अनुवाद उर्दू में भी, हमको उनके उपदेशों में प्रचलित बिदअतों का नाम व निशान नहीं मिला, न वह कभी अपने पीर को पुकारते मिलते हैं न उनसे बड़ों को यहाँ तक कि "या रसूलल्लाह" कहना भी उनके उपदेशों में कहीं नज़र नहीं आता, वह अपने किसी बुजुर्ग की कब्र पर न तो चढ़ावा चढ़ाते नज़र आते हैं न चादर चढ़ाते वह अपनी दुआवों में सिर्फ अल्लाह से माँगते नज़र आते हैं न वह किसी वली से माँगते दिखते हैं न किसी पैगम्बर से, वह लोगों को केवल अल्लाह से माँगने की शिक्षा देते नज़र आते हैं, उनके प्रवचनों में मुझको यही नज़र आया जो मैंने लिख दिया।

❖❖❖

**इख़्लास और उसके .....**

सहा–बए–किराम को भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुहबत से कब फाइदा हुआ? जब ईमान ले आये, वरना अबू जहल भी रोज़ मिलता था लेकिन क्या वह बदल गया, वह तो मुखालफत में डटा हुआ था इसी प्रकार अगर कोई तंक़ीद (आलोचना) के साथ आयेगा और दिल व दिमाग में इधर उधर की बातें ले कर आयेगा तो फिर जाहिर है उसको फायदा कैसे पहुंच सकता है? हज़रत मौलाना मुहम्मद अहमद साहब प्रतापगढ़ी रह0 फरमाया करते थे कि जब ऐसी जगहों पर (यानी अल्लाह वालों के पास) जाओ तो नशेब (ढ़ाल– यानी छोटा) बन कर जाओ, नशेब बन कर जाओगे तो कुछ आ जायेगा और अगर खुद तुम टीले बन कर या खम्भा बन कर जाओगे तो इधर उधर से चला जायेगा, यानी कुछ भी बरकत व फाइदा हासिल न होगा।

❖❖❖

**हज का सौभाग्य.....**

मुहतरम हाजियो! आपके सामने सबसे बड़ी समस्या आपसी मत भेद की आयेगी, आपको सोचना है कि हक़ पर रहते हुए किस प्रकार इस मतभेद को भुला कर आपसी मेल जोल पैदा कराया जा सके अगर आप सच्चे मन से विचार करेंगे तो अल्लाह तआला आपकी मदद करेगा। और आपके प्रयासों से मुसलमानों में मेल जोल पैदा होगा। अन्त में हम दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला आपके हज को कबूल फरमाये और आपकी बाकी जिन्दगी में आपसे वही काम ले जो उसे पसन्द हो, आखिर में हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ते हुए अपनी बात ख़त्म करते हैं।

❖❖❖

**अनुरोध**

प्रिय पाठकों से अनुरोध है कि वह सच्चा राही के ग्राहक बना कर सहयोग दें।

# मुसलमानों की जागरूकता

—मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

आज सम्पूर्ण मानवता को आर्थिक व सामाजिक संकट, दैवीय आपदाओं, जातिवाद व क्षेत्रवाद और अलगाव पसंदी के रुझानों के कारणवश युद्धों का सामना करना पड़ रहा है। अपने जायज़ व नाजायज़ अधिकारों व मांगों के लिए व्यक्ति व समूह आतंकवाद की राह अपना रहे हैं। जिसके परणिामस्वरूप मानव जीवन व मानव संस्कृति को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। लाखों इन्सान भुखमरी, सूखा व जंग के कारण मौत का निवाला बन रहे हैं। अप्रिय घटनाओं व प्राकृतिक आपदाओं की बहुतायत है। लाखों लोग आवश्यकताओं के न मिलने से संघर्षपूर्ण जीवन बिता रहे है। अनैतिकता व शांति भी अपने चरम पर है।

एक ओर तो मनुष्य उन परेशान करने वाली समस्याओं का सामना कर रहा है, दूसरी ओर पश्चिमी शासक व लेखक, राजनेता और शांति के ध्वजवाहक सम्पूर्ण मानवता की इन समस्याओं को हल करने के बजाए अपना ध्यान और सम्पूर्ण संसार का ध्यान एक ऐसे खतरे और गंभीरता की ओर मोड़ने में व्यस्त हैं जिसका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है और ये मानसिक भय की पैदावार है, वास्तविक में खतरों से मुंह मोड़ा जा रहा है। जो सम्पूर्ण संसार के लिए वास्तव में गंभीर परिणाम उत्पन्न करने वाला है।

इस दौर में मीडिया इन लाखों लोगों की ख़स्ताहाली से नज़रे चुरा रहा है जो संसार के विभिन्न क्षेत्रों में मुसीबतों का शिकार हैं और उन लाखों एशियाई व अफ़्रीकी नागरिकों की क़िस्मत की महरूमी को नज़रअन्दाज़ कर रहे हैं जो दो वक़्त की रोटी के मोहताज हैं। हालांकि उनकी ख़बरों को खोजने की बढ़ी हुई ताक़त दूरगामी है जो छोटी–छोटी घटनाओं और छोटे–छोटे हादसों को उन तक पहुंचाती है। उन्हें एक ही समय में मोटरों और बसों के हादसे, दूर–दराज़ के क्षेत्रों में ट्रेनों के हादसे, जहाज़ों के अपहरण, बैंकों की लूट या किसी भी व्यक्ति के लुट जाने का पता रहता है, और वे इन घटनाओं को बड़ी तफ़सील से पेश करते हैं। दूसरी ओर वे बड़ी पीड़ा को नज़रअन्दाज़ कर देते हैं। यदि वे मुसीबतों व समस्याओं का सामना कर रहे हैं, इन्सानी बस्तियां और दम तोड़ती ज़िन्दगियां इन ख़बरी एजेन्सियों के प्रकार से भिन्न हैं। उनका रंग व ख़ून उनके रंग व ख़ून से अलग है, उनकी जाति उनसे अलग है, इनकी भाषा उनकी भाषा से मेल नहीं खाती और इनका दीन उनके दीन से भिन्न है।

संसार बहुत धोखे में है कि यूरोप धार्मिक व जातिवादी पक्षपात से ऊपर उठ गया है। वह शुद्ध धर्मनिरपेक्ष है और अन्तर्राष्ट्रीय विचार रखता है। यह केवल धोखा और फ़रेब है जिसमें अच्छे–ख़ासे

पढ़े लिखे लोग पड़े हैं। पश्चिम के साथ होते लगातार अनुभव ने बात साफ़ कर दी है कि पश्चिमी दुन्या कभी भी धर्मिक पक्षपात, वर्गीय खींचतान और सम्प्रदायिकता से स्वतन्त्र नहीं रही। उनके सारे साधन व एजेंसियां चाहे मानवाधिकार की हों या रिलीफ़ की हों और चाहे शिक्षा व प्रशिक्षण की हों या तकनीकी हों, सब की सब धार्मिक प्रभाव व जातिवादी पक्षपात में डूबे हुए हैं।

धार्मिक विचार या जातिवादी पहचान कोई ऐब की बात नहीं यदि वो स्वीकार्य हो। जो चीज़ ख़तरनाक और चिंतनीय है वो ये कि दीनी विचार नकारात्मक हो यानि ये विचार की दूसरे दीनों व धर्मों से नफ़रत की जाये और दूसरी क़ौमों से नफ़रत और बुराई की सोच रखी जाये।

यूरोप का विचार हमेशा ही से नकारात्मक रहा है। वह अपनी भाषा, सभ्यता, दृष्टिकोण की दावत देने वाला ही नहीं बल्कि दूसरों की भाषा सभ्यता और दृष्टिकोण को मिटाना चाहता है। उसने दूसरी भाषाओं, सभ्यताओं और इतिहास का अध्ययन इसी आधार पर किया है और उसकी रिसर्च संस्थाएं इसी आधार पर काम करती हैं।

यूरोप की ओर से वैचारिक हमले का आरम्भ इस प्रकार से हुआ कि सबसे पहले इस्लाम का अध्ययन किया गया और ये इसलिए नहीं कि उसे इस्लाम से महब्बत थी या उनके अन्दर इस्लामी सभ्यता के उत्थान का भाव था, बल्कि केवल इस्लामी इतिहास को बिगाड़ कर इस्लामी ज्ञान व शिल्प के क्षेत्र में बदलाव करके और उसके और उसके महान नेतृत्व के चरित्र को बिगाड़ कर प्रस्तुत करने के लिए उसने सबसे पहले आप सल्ल0 को विषय बनाया या आरम्भ के इतिहास को। इन सभी कोशिशों के पीछे ये भाव कार्यरत रहा कि इस्लाम के पैरोकारों और दीन के मतवालों को नयी नयी समस्याओं में उलझा कर रखा जाये और उनके दिमाग़ में शक व शुब्हा पैदा किया जाये। हालांकि सकारात्मक रूप तो ये था कि यूरोप वाले हज़रत मसीह अलै0 की ज़िन्दगी और उनकी शिक्षाओं का प्रचार करते और पश्चिमी उन्नतिप्राप्त सभ्यता और संस्कृति से दुन्या को परिचित कराते। लेकिन पश्चिम और यूरोप वालों के यहां हमेशा नकारात्मक पहलू को वरीयता प्राप्त रही है। यही कारण है कि वो सच्चाई के बजाए वहम की भूल भुलैया में भटकते रहते हैं। इसी प्रकार उनकी ख़बरी एजेंसिया ख़्यालों और अनहोनियों को हवा देती रहती हैं। वो इसको सही समझती हैं कि इस्लामी दुन्या को भयानक और ख़तरनाक अज़दहा बना कर पेश करें। वो दुन्या की आंखों में धूल झोकती हैं। वो इस्लामी दुन्या को ज्वालामुखी बनाकर पेश करती है, जिसके फटते ही कायनात बिखर जायेगी। वर्तमान सभ्यता व संस्कृति तार तार हो जायेगी और मानवता दम तोड़ देगी। अक़लमंद फ़िरंगियों और इस्लामी देशों मे उनके चेलों व शागिर्दों की लेख व खोजों

में बीमार ज़ेहनियत, ख़ौफ व हिरास और शक व शुब्हे की ज़ेहनियत जारी व सारी नज़र आती है।

पुराने क़िस्सों में एक क़िस्सा आता है कि एक जिन्न को एक बोतल में बंद करके समंदर में डाल दिया गया। लेकिन लोग हमेशा डरते रहते थे कि कहीं ये जिन निकल न आये। यही हालत पश्चिम की है। उसने अपने गुमान में इस्लाम को अपने सामराज्यी युग की बोतल में बंद कर दिया है लेकिन उसे हर वक़्त ये डर रहता है कि कहीं ये जिन्न थोड़ी से हरकत से फिर बोतल से निकल कर पश्चिम के निर्माण किये हुए सांस्कृतिक महल को ज़मीन में न धंसा दे।

यूरोप में ये डर व ह्रास दिलों में इसी तरह समा गया है कि इस्लामी रुझान और उसके अधिपत्य को समझने के लिए कान्फ्रेंस आयोजित की जा रही है। उन साधनों का पता लगाया जा रहा है जिनसे इस्लामी रुझानों को रोका जा सके और इस्लाम के ख़िलाफ़ ज़ेहन बनाने के लिए हर प्रकार के साधनों से काम लिया जा रहा है।

ये सारे हरबे केवल इस्लामी दुनिया को हिरासां करने के लिए इस्तेमाल किये जो रहे हैं। इसमें दुनिया के बड़े-बड़े अख़बार और अहम मैग्ज़ीन भी शामिल हैं। इनमें न्यूयार्क टाइम्स, सन्डे मैग्ज़ीन, टेलीग्राफ़ और लोमोन्ड इत्यादि सबसे ऊपर हैं। इस्लामी ख़तरे से जुड़े हुए पश्चिम के चोटी के मार्गदर्शक और लीडर भी बयान देते रहते हैं। वे खुले शब्दों में अपनी शंका प्रकट करते हैं और इस्लामी देशों में अपने एजेन्टों को इस्लामी आन्दोलनों के कुचल देने पर उभारते हैं।

रेडियो और टेलीविजन से ऐसे प्रोग्राम प्रस्तुत किये जाते हैं जिनमें इस्लामी दुनिया की समस्याओं पर बहस होती है और प्रोग्रामों में उन समस्याओं की ओर इस प्रकार इशारा किया जाता है कि ये इन देशों के इस्लाम से जुड़ने का परिणाम है।

इस्लामी देशों के गैरमुस्लिम अल्पसंख्यकों की ख़स्ताहाली का प्रोपगन्डा किया जाता है। गैर इस्लामी देशों में मुस्लिम अल्पसंख्यकों की अस्ल परेशानी और बदहाली को अंधेरे में रखने की कोशिश की जा रही है। इस्लामी देशों में पश्चिमी शासन व्यवस्था की नाकामी के बाद लाज़मी बात है कि इस्लामी दुनिया पश्चिमी नज़रिये से मायूस हो और उससे छुटकारा पाना चाहिए।

इन प्रोपगन्डों को थोड़ी बहुत जो कामयाबी मिली है उसका कारण ये है कि इस्लामी दुन्या में पश्चिम के कठपुतली शासक दिल व जान से उनके साथ हैं। इस्लामी आन्दोलनों को कुचलने के लिए ख़ास तौर पर उन्हें मदद दी जाती है। पश्चिम ने मक्कारी के कमाल से इस्लामी दुन्या के शासकों में इस्लाम से दहशत व नफ़रत पैदा कर दी है। इस्लामी दुन्या के अहम अख़बारों के लेखकों और कलमनिगारों ने अपने पाठकों को पश्चिम के दहशत व भय से इस प्रकार आगाह किया और कर रहे हैं, जैसे इस्लामी दुन्या की

शेष पृष्ठ.....34...पर

# आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

**प्रश्नः** बुजुर्गों की फातिहा का क्या मतलब है? फातिहा का तरीक़ा बताइये।

**उत्तरः** फातिहा का लफ़्ज इस अर्थ में बर्रे सगीर (उपमहाद्वीप) की ईजाद है। इसका अर्थ यह है कि कोई भला काम करके अल्लाह तआला से दरख़्वास्त की जाये कि ऐ अल्लाह मेरे इस भले काम को क़बूल कर लीजिये और इसका सवाब (प्रतिफल) फ़ुलाँ की रूह (आत्मा) को प्रदान कर दीजिए इसको फातिहा देना कहते हैं, इसीको ईसाले सवाब भी कहते हैं। यह ईसाले सवाब चाहे बुजुर्ग के लिए हो चाहे साधारण आदमी के लिए, परन्तु इसमें अनिवार्य यह है कि फातिहा देने वाला और जिसको फातिहा दिया गया है दोनों ईमान वाले हों।

**प्रश्नः** बड़े पीर, हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 के फ़ातिहा का क्या तरीक़ा है?

**उत्तरः** चाहे शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी हों या कोई और बुजुर्ग या आम आदमी, सब के फातिहे का तरीक़ा एक ही है जो ऊपर के उत्तर में लिखा गया।

**प्रश्नः** हमारे यहाँ रवाज है कि बड़े पीर साहब के फातिहे के लिए अच्छी मिठाई लाई जाती है या मीठे चावलों (ज़र्दे) की देग सामने रख कर फिर कुछ पढ़ कर फ़ातिहा देते हैं फिर मिठाई और ज़र्दे को तबर्रुक कहते हुये आपस में तक़्सीम करते और खाते खिलाते हैं इस का क्या हुक्म है?

**उत्तरः** ऐसे फातिहे पर सच्चा राही की ओर से कोई हुक्म लगाना उचित नहीं परन्तु यह बताना ज़रूरी है कि किसी बुजुर्ग ने इस ख़्याल से कि कुछ कुर्आन मजीद पढ़ने और खाना गरीबों को देने का सवाब एक साथ अपने किसी अजीज को बख़्शे इसके लिए उन्होंने खाना सामने रखा होगा और कुछ पढ़ कर दुआ की होगी लेकिन फातिहे के लिए यह सूरत इख़्तियार करने की ज़रूरत न थी, खाना ग़रीब को दे कर और कुछ पढ़ कर सवाब बख़्श दिया जाता, लेकिन इस सूरत में भी अगर खाना ग़रीब को दे दिया जायेगा तो सवाब पहुंच जायेगा, लेकिन अफ़सोस यह है कि यह सूरत ऐसी रवाज पा गई है कि फातिहा देने के लिए और कोई सूरत पसन्द नहीं की जाती, अब अगर बड़े पीर साहब के फातिहे में यही सूरत अपनाई गई है तो वह मिठाई और जरदा ग़रीबों का हक़ हुआ अगर मालदारों ने खाया तो गरीबों का हक खाया। अगर फातिहा देने वाले ने अपनी मरज़ी से वह मिठाई और ज़रदा मालदारों को खिलाया तो गलत किया और उस मिठाई और ज़र्दे का सवाब बड़े पीर साहब को नहीं पहुंचा यह उत्तर सम्पादक ने अपने ज्ञान से लिखा है जो इससे सहमत न हों वह सम्पादक को क्षमा करें।

**प्रश्नः** फातिहे का क्या हुक्म है?

**उत्तरः** फातिहा (ईसाले सवाब) अर्थात अपना सवाब दूसरे को दे देने की दरख्वास्त अल्लाह तआला से करना, न फर्ज़ है न वाजिब न सुन्नत अलबत्ता पवित्र हदीस से यह मालूम होता है कि किसी सहाबी ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम किया कि मेरे फुलां अज़ीज़ की वफ़ात हो गई है अगर मैं फुलां नेक काम उनकी तरफ़ से कर दूं तो क्या उनको सवाब पहुंचेगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, हाँ पहुंचेगा। इस मफ्हूम (भावार्थ) की एक से ज़ियादा हदीसें हैं इनसे मालूम हुआ कि फ़ातिहे का कोई हुक्म नहीं है लेकिन जाइज़ है।

**फ़ातिहे के फ़ायदेः** फ़ातिहा अस्ल में मग़फ़िरत की दुआ और तलबे रहमत की एक शक्ल है हम जिसको सवाब बख्शते हैं गोया कि अल्लाह तआला से कहते हैं कि ऐ अल्लाह इस का सवाब उनको दे कर उन पर रहमत का इज़ाफ़ा कीजिए। बुज़ुर्गों के फ़ातिहे का यह फ़ायदा है कि उनके सवाब में इज़ाफ़ा होगा उन पर रहमत का इज़ाफ़ा होगा उनसे हमारा तअल्लुक़ क़याम रहेगा जिसका इशारा पवित्र कुर्आन की आयत में इस प्रकार है "सच्चों के साथ रहो" (तोबा:119) दूसरी जगह है "ऐ हमारे रब हम को बख़्श दे और हमारे उन भाईयों को जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं" (यानी सहा–बए–किराम) हश्र 1:10) और हम हर नमाज़ में कहते हैं "हम पर सलामती हो और अल्लाह के नेक बन्दों पर भी"।

आम मुसलमानों को सवाब बख्शने से यह फायदा होता है कि उनके सवाब में इज़ाफ़ा होता है उन पर रहमत नाज़िल होती है, उनके गुनाह माफ़ होते हैं। इससे मालूम हुआ कि दूसरों को सवाब बख्शने का यानी फातिहा देने का अमल बड़ा मुफ़ीद है इसको अपनाना चाहिए मगर इसको बिदअ़त न बना देना चाहिए, बिदअ़त की शक्ल यह है कि फातिहे की तारीख़ मुक़र्र करें, फ़ातिहे की जगह लीप पोत कर साफ करें, खुशबू जलायें, खाना सामने रख कर, हाथ उठा कर दुआ करें इन सब चीज़ों को ज़रूरी समझना बिदअ़त है। फाहिता हर मुसलमान दे सकता है औरत हो चाहे मर्द, बस फातिहा यह है कि कोई ईमान वाला औरत हो या मर्द कोई नेक काम करके खाना या कपड़ा मुहताज को दे कर या किसी ग़रीब की ज़रूरत पूरी कर के या कुर्आन शरीफ पढ़ कर या दुरूद शरीफ पढ़ कर या कलमा पढ़के या तस्बीह पढ़ के अल्लाह तआला से दुआ करे कि ऐ अल्लाह मेरे इस अमल को क़बूल कीजिए और इसका सवाब फुलां की रूह को बख़्श दीजिए, और तमाम ईमान वालों को बख़्श दीजिए।

**प्रश्नः** एक ग़ैर मुस्लिम ने एक मुसलमान को फोन किया जब मुसलमान ने फोन उठाया तो उधर से आवाज़ आई "नमस्ते" जवाब में मुसलमान ने भी "नमस्ते" कहा लेकिन बात हो जाने के बाद मुसलमान को एहसास हुआ कि मुझ से बड़ी ग़लती हो गई तौबा व

इस्तिगफ़ार कया, अब वह मुसलमान मालूम करता है कि उस पर कोई हुक्म तो न लगेगा? मुझ पर कोई कफ़्फ़ारा तो नहीं है?

**उत्तरः** "नमस्ते" के माना अच्छे नहीं हैं बाज़ हिन्दी जानने वालों ने बताया कि इसमें मुश्रिकाना (ग़ैरुल्लाह के सामने सजदा या रुकूअ़ करने) के माना पाये जाते हैं इसलिए किसी मुसलमान को इसे इस्तेमाल नहीं करना चाहिए न समझी से अगर यह कल्मा जुबान से अदा हो गया और एहसास होते ही तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लिया तो अब कोई गुनाह नहीं रहा अब उस मुसलमान पर कोई हुक्म नहीं लगेगा न उसको कोई कफ़्फ़ारा देना होगा।

**प्रश्नः** अगर ग़ैर मुस्लिम मुलाकात के वक़्त नमस्ते कहे या नमस्कार कहे या प्रणाम कहे तो जवाब में मुसलमान क्या कहे इसी तरह अगर किसी ग़ैर मुस्लिम से मुलाक़ात हो तो मुसलमान उसके एहतराम में किस लफ़्ज़ से पेश क़दमी करे?

**उत्तरः** जब कोई ग़ैर मुस्लिम मुसलमान को नमस्ते कहे तो यह जवाब में कहे नमस्ते अल्लाह को (ईश्वर को) या नमस्कार अल्लाह को या प्रणाम अल्लाह को। अगर किसी अपने से बड़े ग़ैर मुस्लिम से मुलाक़ात हो तो "आदाब अर्ज" कह कर उसका एहतराम करे या ऊपर के अलफाज़ अल्लाह (ईश्वर) को नमस्ते या अल्लाह (ईश्वर) को नमस्कार आदि कहें।

❖❖❖

**मुसलमानों की .....**

सबसे बड़ी और नाज़ुक समस्या यही है। लेकिन फ़क्र व जिहालत, पसमान्दगी, तानाशाही, शराब और जुर्मों की अधिकता की ओर ये भूल से भी नज़र नहीं उठाते। हालांकि ये इस्लामी देशों में यूरोप की वफ़ादार हुकूमतें क़ायम हैं जो जनता के नाम पर ऐश कर रही हैं। उनकी जनता अत्याचार का शिकार है। बहुत से देशों में चुनाव समाप्त कर दिये गये। यहां सालो साल से लोग क़ैदियों की तरह जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सड़कों पर चलते हुए बेगुनाह इन्सानों को क़ैद करके जेलों में भेज दिया जाता है। जहां उन्हें सख़्त तकलीफ़ें दी जाती हैं। लेकिन ये न कोई सोचने की बात है न सभ्यता व संस्कृति से इसको कोई ख़तरा है। इब्लीस को अगर डर है तो बस इस्लाम से है।

इस ज्ञानवर्धक लेख का हिन्दी रूप "अरफात किरण" से लिया गया। इसके अन्त पर किताब व सुन्नत के अध्ययन के प्रकाश में यह काव्य पढ़ता हूँ: मिलकर लगालें जोर सब बातिल की कूवतें, पर जानलें इस्लाम का अल्लाह है निगहबान।

❖❖❖

## या रब

मैं हूँ ज़ईफ़ो आजिज़
तू है क़वी व क़ादिर
या रब करीम तू है
तू ही मेरा है नासिर
कुदरत से अपनी या रब
हालात को बदल दे
ज़ुल्मो सितम जहां हो
इन्साफ़ से बदल दे

❖❖❖

पिछले अंक से आगे....

# हमारी नयी नस्ल और बदलते मूल्य

—डॉ0 हैदर अली खाँ

"गोयबेलियन" सत्य के अनुसार सौ बार झूठ को सच बता दिया जाय तो वह सत्य प्रतीत होने लगता है। आज कल प्रायः यही हो रहा है। इससे नयी नस्ल खास कर भ्रमित हो जाती है और अवास्तविकता व धोखा को सच समझकर उसके पीछे दौड़ने लगती है। इससे समय एवं धन की बर्बादी तो होती ही है, वह अनेक प्रकार की भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं से ग्रसित हो जाता है। अवसाद (Depression) का शिकार आज नवजवान अक्सर हो जा रहा है। परिणाम यह होता है कि वह स्वयं अपने लिए, परिवार तथा समाज के लिए एक समस्या बन जाता है। अतः इस बात की नितांत आवश्यकता है कि अवास्तविक विज्ञापनों से निजात दिलाने के लिए कठोर नियम बनाया जाना चाहिए तथा उसका अनुपालन भी सुनिश्चित कराया जाना चाहिए। इसी के साथ नयी नस्ल की सही दीक्षा होनी चाहिए ताकि भयानक परिणामों से समय रहते वह आगाह हो सके। आज का नवजवान वास्तविकता का मुक़ाबला करने की जगह सिनेमा व सीरियल के पर्दे पर नज़र आने वाली ड्रामाबाजी की शानदार ज़िन्दगी को वास्तविक समझने की भूल कर बैठता है और जब वैसी ज़िन्दगी नहीं बन पाती तो वह अवसादग्रस्त हो जाता है। नशाखोरी का आदी हो जाता है या फिर आत्महत्या कर लेता है। हमारे सामने यह चुनौती भी गंभीरता से खड़ी है।

आज का दौर विज्ञान का युग है। नयी नस्ल हर बात को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखती है। उसका चिंतन तार्किक (Logical) हो गया है। वह धार्मिक सिद्धान्तों व उपदेशों, प्राचीन परम्पराओं और मूल्यों व नैतिकता को बुद्धि व विवेक के तराजू पर तौलता है, जो बात इस कसौटी पर खरी उतरती है उसे वह स्वीकार कर लेता है, जो उसे सच नहीं लगता उसके प्रति उसके मन में संशय उत्पन्न हो जाता है और वह दुविधा में पड़ जाता है। इस आलोक में नयी नस्ल की प्रशंसा की जानी चाहिए कि वह कम से कम अंधविश्वासी नहीं है। वह पुरानी पीढ़ी को अंधविश्वास, अतार्किकता तथा अवैज्ञानिकता का दोषी मानता है। हालांकि उसे यह समझना चाहिए कि हजारों साल गुजर जाने के बाद उसका वैज्ञानिक एवं तार्किकता का आधुनिक विचार आज की इक्कीसवीं सदी में छन छना कर निरूपित हुआ है। विडम्बना यह है कि देश दुन्या की बड़ी आबादी तथा अशिक्षित लोग पुरानी रीति नीति के आज भी कायल हैं। वैज्ञानिक आस्था को सार्वभौम होने में अभी समय लगेगा। आज की

विडम्बना यह भी है कि ज़माने से सिद्ध व व्यवहारित उपयोगी बातों पर आशंका व्यक्त की जाती है तथा उन पर मनोयोग से अमल नहीं किया जाता है। समाज को इस सोच की भारी क़ीमत चुकानी पड़ रही है।

हमारी नई नस्ल पर जल्दबाज़ी का नशा चढ़ा हुआ है। वह हड़ बड़ी में फौरन परिणाम की आशा करने लगता है। उसे समझना चाहिए कि "रोम एक दिन में नहीं बना था" वह बनते–बनते सैकड़ों साल में बना था। छत पर चढ़ा हुआ व्यक्ति एक–एक सीढ़ी चढ़कर ऊपर पहुंचा है। स्पष्ट है कि हड़बड़ी में गड़बड़ी की आशंका है। यदि रातों रात कोई उपलब्धि कभी–कभार मिल भी जाती है तो वह अस्थिर होती है अर्थात टिकाऊ नहीं होती।

यह विडम्बना है कि हमारी पुरानी पीढ़ी नयी नस्ल की आलोचना तो करती है किन्तु नयी सोच के कारकों पर गहराई एवं गंभीरता से गौर नहीं करती और न ही सत्य, शिव एवं सुन्दरता हेतु उसे ठीक ढंग से प्रेरित ही करती है। प्रलाप की जगह प्रयास ही सार्थक एवं स्वागत योग्य है, नयी सभ्यता में कार्पोरेट सेक्टर लोगों को केवल अर्थ (धन) को ही जीवन का एक मात्र पौरुष बता रहा है, जबकि धर्म, काम और मोक्ष' भी युगों तक हमारे पुरुषार्थ का अंग रहे हैं। इससे जीवन का संतुलन बिगड़ रहा है। आदमी "मशीन का एक पुर्जा" (A cog in the machine) बनता जा रहा है। इसीलिए कहा गया है कि 'आदमी केवल रोटी से ही ज़िन्दा नहीं रहता'। (man does not live by bread alone)। विचार शून्यता की ओर ले जाने वाली नयी सभ्यता हमारे 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को तहस–नहस कर रही है। सौहार्द एवं सद्भावना की जगह ईर्ष्या, जलन एवं दुर्भावना का विष लेबल बढ़ता तथा चढ़ता दिखाई दे रहा है। संतों व सूफियों की धरती पर यह खटकने वाली बात है। सर उठाते ही इसे कुचल देने (To nip in the bed) की आवश्यकता है। इसलिए हमारी पुरानी पीढ़ी को धैर्य से अनवरत प्रयास करने की ज़रूरत है। देर हो सकती है किंतू अंधेर तो नहीं होगी।

हमारे देश में नयी नस्ल जिस तरह अपने अनिश्चित भविष्य को लेकर चिंचित है, वह भी हमारे सरोकार का विषय है। रोजगार के अवसर कम हैं किन्तु राजनेताओं द्वारा समय–समय पर रोजगार का सुंदर सपना दिखा दिया जाता है किन्तु उसे पूरा नहीं किया जाता। उससे उसमें निराशा घर करने लगती है। वह या ता अवसादग्रस्त हो जाता है, या फिर विद्रोही बन जाता है। उसके लिए, परिवार एवं समाज के लिए यह स्थिति अत्यन्त चिंताजनक है। अतः समझदार बड़े–बूढ़ों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शासकों तथा नीति निर्माताओं (Policy makers) को इस ओर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए, लेकिन यह काम नयी नस्ल के स्वयं की चिंता,

चिंतन तथा योगदान के बिना संभव नहीं है। उन्हें धरातल की सच्चाइयों को समझना होगा और तदनुरूप स्वयं भी प्रयास करना होगा। यह भी उनसे अपेक्षा की जायेगी की प्राचीन मूल्यों, नीतियों एवं नैतिकता के प्रति आदर भाव रखने में ही उनका एवं हम सबका भला है। बड़ी चतुराई से पुराने एवं नये मूल्यों में समन्वय स्थापित करना होगा। भौतिकतावाद के अतिरेक से बचना भी होगा। जीवन में सादगी लाना ही उत्तम होगा। शिक्षा निश्चय ही समझदारी पैदा करती है और ससम्मान जीवन के लिए सुअवसर प्रदान करती है। अतः शिक्षा को सफल जीवन के असर के रूप में मानना होगा। संकीर्णता से निकलकर उदारवादी दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत हमारे समय की मांग है। हमें आशा है कि हमारी नयी नस्ल इंगित सद्मार्ग पर चलेगी। यही उसके, परिवार तथा समाज के लिए हितकारी है।

❖❖❖

# हरमैन शरीफ़ैन

हरमैन शरीफ़ैन पे अल्लाह की रहमत है
हरमैन के ख़ुददाम पे अल्लाह की रहमत है
हरमैन में क़ायम है इस्लामी हुकूमत
हरमैन में जारी है इस्लामी शरीअ़त
मक्की हरम में काबा है, मौलद है नबी का
मदनी हरम में रौज़–ए–अनवर है नबी का
मक्की हरम में होती है हाँ हज की इबादत
मदनी हरम में होती है रौज़े की ज़ियारत
इस्लाम की हिफ़ाज़त, वादा है ख़ुदा का
हरमैन में दिखता है वादा यह ख़ुदा का
हरमैन से तो मोमिन रखता है महब्बत
हरमैन की हर चीज़ से, रखता है महब्बत
या रब मुझे तौफ़ीक़ दे हरमैन को देखूँ
सुनता जो हूँ कानों से आखों से भी देखूँ
यारब नबीये पाक पे लाखों सलाम हों
लाखों दुरूद उनपे और लाखों सलाम हों

❖❖❖

# यह दिन है लोकतंत्र का

—इदारा

दिन है ये लोकतंत्र का दिन संविधान का
लेकर तिरंगा घूमने और राष्ट्रगान का
हर ओर जय जय कार है क्या धूम है मची
हर घर सजा हुआ है और हर गली सजी
हर एक दे रहा है बधाई हर एक को
दस्तूर अपना बन गया पढ़ कर के देख लो
हर एक को है हक़ मिला इस संविधान में
अंतर नहीं है धर्म का इस संविधान में
निष्पक्षता, विशेषता इस संविधान की
इज़्ज़त है हिन्दू मुस्लिम की याँ इक समान की
सिख हो कि मसीही हो हक़ सब को है मिला
हर धर्म को हर भाषा को हक़ है यहाँ मिला
संसद बने हर एक विधायक बने हर एक
नैतिकता के आधार पर नायक बने हर एक
है खेद पर व्योहार में दिखता नहीं है ये
नेता हमारे ध्यान दें क्या हो रहा है ये
होना सुधार चाहिए इस देश में अवश्य
सम्मान करना चाहिए दस्तूर का अवश्य
अपमान संविधान का होना न चाहिए
विपरीत संविधान के चलना न चाहिए
आओ करें प्रण हम मिल कर के सब यहाँ
दस्तूर की अन देखी अब होएगी ना यहाँ

# उर्दू सीखिये

—इदारा

## उर्दू लफ़्ज़ और उर्दू हरफों के शोशे (उर्दू शब्द और उर्दू अक्षरों के चिन्ह)

उर्दू लेखन का नियम है कि उर्दू के दो लफ़्ज़ मिला कर नहीं लिखे जाते लेकिन एक लफ़्ज़ के तमाम हर्फ़, शोशों द्वारा मिला कर लिखे जाते हैं परन्तु कुछ हर्फ ऐसे भी हैं जिनके शोशे नहीं होते न वह दूसरे हर्फों से मिल पाते हैं अलबत्ता उनसे पहले दूसरे हर्फों के शोशे मिलते हैं, जब यह हुरूफ एक लफ़्ज़ के बीच में आ जाते हैं तो लफ़्ज़ के अगले हर्फ से अलग हो जाता है।

**शोशाः** उर्दू हर्फ के छोटे चिन्ह को शोशा कहते हैं। वह हुरूफ (अक्षर) जिनके शोशे नहीं होते और वह दूसरे हर्फों से नहीं मिलते आठ हैं– ا، و، ڈ، ذ، ر، ڑ، ز، و उर्दू के सात हर्फों के शोशे एक समान होते हैं वह सातों यह हैं– ب، پ، ت، ٹ، ث، ن، ی इनमें अन्तर नुक्तों (बिन्दियों) से किया जाता है, नीचे एक नुक़्ता हो तो ب,दो नुक्ते हों तो ی, तीन नुक्ते हों तो پ,ऊपर एक नुक्ता हो तो ن, दो नुक्ते हों तो ت, तीन नुक्ते हों तो ث,ऊपर ط हो तो ٹ पढ़ा जाता है।

इनके शोशे किसी हर्फ के आरम्भ में मिलाने में तीन रूप रखते हैं, पहला रूप सोलह हर्फों में मिलाने के लिये एक तरह का होता है जैसे– با (बा), بب(बब), تٹ (तट),ٹپ (टप), ثب (सब), بث(बस), پر(पर), بڑ(बड़), پز(पज़), یک (यक), یگ (यग), نل(नल), تن(तन)। यह शोशे जब ذ، ڈ، و से मिलते हैं तो उनका टेढ़ा भाग सीधा करके ऊपर निकाल दिया जाता है जैसे– بڈ(बड), بذ(बज़) بد(बद)।

**दूसरा रूप**– हर्फ के पाँच हर्फों से पहले एक तरह का होता है जैसे– بج(बज), چٹ(टच), نح(नह), یخ(यख़), تم(तुम)

**तीसरा रूप**– ग्यारह हर्फों के आरम्भ में एक तरह का होता है जैसे– بس(बस) پس(पुस) بص(बस) پض(पज़) بط(बत) بظ(बज़), ٹف(टफ़) بق(बक़) بی(बी), यह शोशे जब ع غ से मिलते हैं तो उनका मुँह बदल जाता है जैसे– بع(बअ़), بغ(बग़)। यह शोशे जब लफ़्ज़ के बीच में आते हैं तो केवल एक नोक उठा दी जाती है जैसे– بٹن(बटन), پند(पन्द)।

यह शोशे जब लफ़्ज़ के बीच में ڑ ز ر से पहले आते हैं तो नोक उठाने के बजाये जरा टेढ़ा कर दिया जाता है जैसे پیڑ(पेड़), بیر(बैर)।

# अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

**इजरायल व भारत में हो सकते हैं तीन करार—**

केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह की इजरायल यात्रा के दौरान तीन अहम समझौतों पर हस्ताक्षर किए जाने की उम्मीद है। ये समझौते आंतरिक सुरक्षा, संगठित अपराध में सहयोग, मानव तस्करी, साइबर अपराध, मनी लांड्रिंग, आतंकवाद और नकली नोट का गोरखधंधा रोकने से संबंधित होंगे। इस बीच, दोनों ही देशों ने राजनाथ की इस यात्रा को अहम बताया है।

सूत्रों ने बताया कि गृहमंत्री के एजेंडे में आंतरिक सुरक्षा में सहयोग सबसे ऊपर है। आतंकवाद की नई चुनौतियों पर तकनीकी सहयोग पर भी वह इजरायली नेताओं से चर्चा करेंगे। सूत्रों के मुताबिक हथियारों की खरीद के बारे में भी दोनों देश आपसी संबंधों को विस्तार देना चाहते हैं। सूचनाएं साझा करने पर भी परस्पर सहमति के आसार हैं। इसके लिए राजनाथ की यात्रा के पहले दोनों देशों ने खासा होमवर्क किया है। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल की इजरायल के सुरक्षा परिषद के चेयरमैन से आतंकवाद के बढ़ते खतरों पर अलग से भी बात हुई थी। इजरायल के राजदूत ने भी गृहमंत्री से मुलाकात की थी।

**अमेरिका में ओबामा के हाथ से छिनी संसद**— अनुमानों के मुताबिक अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा और उनकी पार्टी डेमोक्रेट को मध्यावधि चुनावों में करारी हार झेलनी पड़ी। रिपब्लिकनों ने पुराने रिकार्ड ध्वस्त करते हुए निचले सदन प्रतिनिध सभा के साथ उच्च सदन सीनेट में भी बहुमत हासिल कर लिया है।

सीनेट के नतीजे इतने बुरे रहे कि ओबामा के गृह नगर इलिनॉयस और गढ़ मानी जाने वाली मैरीलैंड, मैसाच्युसेट्स जैसी सीट भी डेमोक्रेट गंवा बैठे।

अब ओबामा को बाकी बचे दो साल के कार्यकाल में घरेलू या अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर रिपब्लिकनों को साथ लेकर चलना पड़ेगा। हालांकि रोनाल्ड रीगन के बाद हर मौजूदा राष्ट्रपति को कार्यकाल के आखिरी चुनाव में हार झेलनी पड़ी है।

**पाकिस्तान लक्ष्मण रेखा नहीं लांघे: जेटली**— रक्षा मंत्री अरुण जेटली ने पाकिस्तान से दो टूक शब्दों में कहा है कि उसे यह तय करना होगा कि वह भारत सरकार से वार्ता करना चाहता है या उन लोगों से जो भारत को तोड़ना चाहते हैं। उन्होंने कहा, वार्ता के लिए भारत तैयार है और वह संबंधों को सामान्य बनाना चाहता है, लेकिन कुछ लक्ष्मण रेखाएं हैं।

उन्होंने कहा हमारे विदेश सचिव को पाकिस्तान जाना था और उससे कुछ ही घंटे पहले पाकिस्तान ने नई दिल्ली स्थित अपने उच्चायोग में अलगाववादियों को बातचीत के लिए बुला लिया। भारत आर्थिक शिखर बैठक में जेटली ने कहा, जब तक पाकिस्तान इस बारे में निर्णय नहीं करता है, वार्ता संभव नहीं है। अगस्त में भारत से वार्ता की पूर्व संध्या पर पाकिस्तान के उच्चायुक्त द्वारा कश्मीर के अलगाववादियों से बात करने पर भारत ने पाकिसतान से होने वाली विदेश सचिव स्तरीय वार्ता रद्द कर दी थी। संघर्ष विराम उल्लंघन किए जाने पर जेटली ने कहा, नागरिक आबादी पर फायरिंग और गांवों को उजाड़ना पाक के लिए भारी कीमत वाला साबित होगा।

❖❖❖